मासिक—

मानव मन्दिर

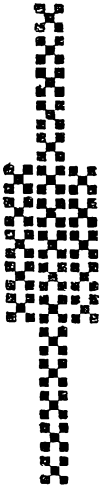

सम्पादक : एम. आर. भक्त
पी. एस. ई (रीटार्यड)

वर्ष ६ | ६ जून १९७९ | संख्या २

बाहर के पूर्ण पुरुष की महिमा

सत्संग परम संत परम दयाल फकीर चन्द जी महाराज मानवता मंदिर होशियारपुर।

दिनांक 25-3-79

आई शाम भज गुरु का नाम।

दिन तो बीता जग व्यौहारा, समय नींद का आया।
सोने से पहले राम को भज ले, मोह मान तज माया।
सोना मौत निशानी समझो, छोटी मौत अवस्था।
मौत से पहले चेत नाम लो, सोधो अपनी अवस्था।
सिमिट सिमिट जल भरे तलाबा, वैसे ही नाम सुमिरना।
मन में शुभ गुण रस रस भरना, फिर आनन्द से मरना।
जन्म मरन छिन छिन है प्रानी, छिन छिन योनी वासा।

जो कोई सुमिरे नाम गुरु का, पड़े न यम की फांसा।
नाम है मंगल सुख की खानी, नाम भक्ति का दाता।
जो कोई पीवे नाम सुधारस, रहे नाम मद माता।
राधास्वामी गुरु ने विधि बताई, अन्तर विरती जमाओ।
सुरत शब्द की करो कमाई, नाम राग धुन गाओ।

राधास्वामी ! मैंने यह शब्द सुना। गुरु का क्या नाम होता है ? किसी गुरु ने किसी को राम राम बता दिया, किसी गुरु ने किसी को कोई मन्त्र बता दिया, किसी को राधास्वामी और किसी को सतनाम बता दिया। यह राधास्वामी, सतनाम या और कोई नाम गुरु का नाम नहीं है। एक आदमी अगर बाबा फकीर, बाबा फकीर, बाबा फकीर ही करता रहेगा या किसी और गुरु का नाम ही सुमिरता रहेगा, उसको यह अवस्था प्राप्त नहीं हो सकती। मेरा हृदय बहुत सच्चाई प्रिय है, मैं स्वयं सोचता हूं कि गुरु का क्या नाम है ? गुरु का नाम वह ज्ञान और अनुभव है जिससे कि हमारा Self इस संसार के झगड़ों और विपत्तिओं में न फंसे और सुख और शान्ति का जीवन व्यतीत करे। जिसको यह अवस्था आ गई हैं उसने नाम को भजा है। बाकी जितने

मैं अपने मस्ष्तिक, समझ, अनुभव और ज्ञान को कहां ले जाऊं ? मुझे कोई निजी स्वार्थ तो नहीं कि भई मैं अवश्य हेराफेरी करके तुम्हें अपने जाल में फंसाऊं। दाता का शब्द है।

आई शाम भज गुरु का नाम।

इसमें दो बातें हैं। यह सुमिरन, ध्यान भजन असली नाम की प्राप्ती के लिए है कि असली नाम न तो रा-धा-स्वा-मी है न पांच नाम है, न राम है, न अल्ला, न करीम, न कुछ और। नाम एक अवस्था और अनुभव है कि मैं कौन हूं, कहां से आया हूं और कहां जाऊंगा। मगर इस ओर तो संसार सोचता नहीं। हम लोग तो संसार को प्राप्त करने के लिए नाम का सहारा लेते हैं कि हमारा संसार बनजाये और हमारी संसारी इच्छायें पूरी हो जायें इस वास्ते हम नाम जपते हैं, गुरु की सेवा करते हैं या कुछ करते हैं। जो आदमी संसारी इच्छाओं के लिए सत्संग में जाता है या अभ्यास करता है, संसारिक दृष्टि से वह ठीक है मगर असली नाम से वह बिल्कुल अनजान है।

हम प्रात: से सायं तक प्रार्थना करते हैं, राम २ जपते हैं या कुछ करते हैं तो मांगते हैं कि हमें यह चीज़ मिल जाये। मांगने से हमारे काम बन जाते हैं क्योंकि हम उसके घर से कुछ मांगते हैं। मांगने वाले अर्थात भिखारी की संसार में कोई प्रतिष्ठा नहीं है। तुम्हारे दरवाजे पर कोई फकीर आता है, आवाज़ देता है, आपकी इच्छा हो एक पैसा दे दो न इच्छा हो न दो। अगर दे भी दिया तो कहते हो कि जा भई! अपना काम कर। जो आदमी भी संसार के लिए, परमात्मा या गुरु को याद करता है, वह भिखारी है। क्योंकि हम देखते हैं कि भिखारी का कोई मान नहीं है इसलिए जितने हम सत्संगी लोग गुरु से मांगते हैं, हम सब भिखारी हैं। हमारा मान नहीं है। भिखारी का कौन मान करता है। मगर हम इसको समझते नहीं।

गुरु का नाम प्रात: सायं जपने से क्या लाभ? असली नाम तो मैंने बता दिया। असली नाम तो यह है।

सुरत शब्द दोऊ अनुभव रूपा।
तू तो पड़ा भरम के कूपा।

जो नाम असल में प्राप्त होता है उसका नाम अनुभव है Realization of Self कि मैं कौन हूं, कहां जाऊंगा ? मगर आप लोग या संसार को तो इस बात की आवश्यकता नहीं है। आप लोग तो संसार की इच्छा रखते हैं। उसके लिए विश्वास और श्रद्धा चाहिए। तुम जिस मत के हो, हिन्दु हो, मुसलमान हो, जैनी हो, अर्थात किसी भी धर्म के हो अपने धर्म के अनुसार अपने २ गुरु को याद करो। अगर तुम उसे सच्चाई से याद करते रहोगो तो जो कुछ तुम मांगोगे वह तुमको मिलता रहेगा। यह मैं क्यों कहता हूं ? मैं बाहर जाता हूं। लाखो आदमी मेरा ध्यान करते हैं और मेरे बाप को पता नहीं कि कौन मेरा ध्यान करता है। जो मेरा ध्यान करते हैं, उनका विश्वास होता है। मेरा रूप उनके अन्तर प्रकट होता है, उनके काम कर जाता है और उपदेश कर जाता है लेकिन मुझे कोई पता नहीं होता। जो कुछ वे करते हैं, यह भी गृहस्थियों के लिये उत्तम बात है। सब लोग तो वैरागी नहीं होते, संसार में सब लोग तो त्यागी नहीं होते,

वह तो कोई कोई आदमी होता है जिसके लिए यह संतमत का सच्चा नाम है, शर्त यह है कि कोई संत मिल जाये तो।

आई शाम भज गुरु का नाम।
दिन तो बीता जग व्यौहारा, समय नींद का आया।
सोने से पहले नाम को भजले, मोह, मान तज मांया।

तुम सायंकाल से पहले रात को सोते समय बेशक नाम भजो अगर मोह माया नहीं तजी हुई है तो वह जो नाम तुम सुमिरन करोगे उसका कोई लाभ नहीं होगा। कब नाम भजो ? जब तक मोह माया और मान प्रतिष्ठा नहीं तजी जायेगी तुम लाख सुमिरन करते रहो तुम्हें कोई लाभ नहीं। यह मैं बड़े उत्साह से कह रहा हूं। क्यों ? मैं सारी अमली ज़िन्दगी अर्थात मैं अपने सारे अमली जीवन का सबक देता हूं। जो बातें किताबों में लिखी हुई हैं, मैं, वे नहीं कहता। जब तक संसारी आशायें हैं इस संसार का यह चक्कर समाप्त नहीं होगा। आज पुत्र की इच्छा है, कल यह काम नहीं हुआ, दो दिन बाद वह काम नहीं हुआ। जब तक किसी

के दिल में ये संसार के विचार हैं अगर वे अभ्यास के समय मोह माया और मान प्रतिष्ठा नहीं छोड़ते तो तुम चाहे कोई भी नाम जो तुम्हारे गुरु ने दिया है, जपो, तुम्हें पूरा लाभ नहीं होगा। यह मेरे अपने अनुभव की बिल्कुल सच्ची बात है। मैंने बहुत नाम जपा मगर मेरे मन से अशान्ति नहीं गई। दाता को शिकायत किया करता था। वह लिखा करते थे, जिसने तुझे फकीर बनाया है, वह फकीर बनाकर छोड़ेगा। तुममें अभीतक संसार की इच्छायें हैं इसलिए तुम्हारे मन को चैन नहीं आता। अब, बताओ, जो नाम की महिमा है क्या साधारण गृहस्थी इसके अधिकारी हैं? नहीं। इसलिए मेरी समझ में यह बात आई है कि भई! कुछ मत मांगो बहुत परिश्रम मत करो। उस मालिक के रूप को समझ कर अपने आपको उसके सपुर्द करते रहो। वह अपने आप तुम्हारे सारे जीवन का काम पूरा करेगा। क्योंकि वह तो एक नियम है (Law) है। "जैसा ख्याल वैसा हाल" जैसी मती वैसी गति, जैसी करनी वैसी भरनी। सायंकाल से पहले नाम जपने के लिए तुम्हारे मन के अन्तर संसार नहीं

होना चाहिए। जो नाम के पीछे फिरते हैं उनके लिए यह शर्त है।

नाम से क्या मिलता है ? मुझे पता नहीं, स्वामी जी महाराज, गुरु नानक साहिब या दाता दयाल को नाम के जपने से क्या मिला। इस लाइन पर आने से मेरे भ्रम शंकाएं और प्रश्नोत्तर समाप्त हो गये। बाकी जो कुछ मुझे मिला, हम कह देते हैं मगर सच्ची बात तो यह है कि अपना अपना कर्म है। मैंने जीवन में दिया हुआ है, मुझे मिलता है। यह नियम है। तुम किसी की सहायता करोगे तुम्हारी सहायता होगी, तुम किसी के साथ शत्रुता करोगे तो कोई तुम्हारे साथ शत्रुता करेगा। यह तो कर्म का नियम है।

सोने से पहले नाम को भज ले, मोह मान तज माया।

मोह मान और माया तजो। इस वास्ते कहा जाता है कि नाम लेने से पहले जब तक काफी समय तक सत्संग नहीं किया जाता, नाम लेने से कोई लाभ नहीं। जैसे संसार वाले कहते हैं कि मैं गुरु से नाम ले आया हूं। बल्कि अपने आपको अपना मस्तिष्क खराब करना और पागल बनाया है। हर बात को

सोच समझ के करो। इस वास्ते बार बार कहा गया है कि पहले सत्संग करो। बात को समझो कि नाम क्या है और तुम कौन हो जब अकली रूप से समझ जाओगे फिर तुम अमली रूप से भी उसका साधन कर सकते हो।

सौना मौत निशानी समझो, छोटी मौत अवस्था।
मौत से पहले चेत नाम लो, सोधो अपनी अवस्था॥

वह कहते हैं कि असली नाम क्या है। इशारा कर गये। यह वह अवस्था है जहां हम अपने मस्तिष्क में किसी प्रकार का और कोई विचार नहीं रखते। इसका नाम समाधि है। एक आदमी दो घण्टे कानों में उंगलियां डालकर बैठ जाता है मगर उसका मन चलता रहता है। उसे नाम लेने का क्या लाभ हुआ? कुछ नहीं। उसने कानों में उंगलियां डाली और तो कुछ नहीं किया। अन्तर में मन तो चलता रहा। मौत में क्या होता है? हम इस संसार को ज़ाहिर में भूल जाते हैं। तुम रात को सो जाते हो, अगर गहरी नींद आ जाये तो आपको कुछ याद आता है? नहीं। न बाप, न मां, न भाई न गुरु, न

चेला अर्थात कुछ याद नहीं आता। यह गहरी नींद में सो जाना ही हमारी अवस्था है, यह शारीरिक है। अभ्यास से ऐसी अवस्था में चले जाना या अपने आपको यह समझना कि मेरा आद यह है बाकी सब माया है, यह अध्यामिकता है। नाम क्या है ? तन को छोड़ो, मन के विचारों को छोड़ो, शेष जो रह जाता है, वह नाम की प्राप्ती है।

यह जो हम चार दस आदमी बैठकर राम, राम, राम, राम हरे राम सीता राम गाते हैं, मैं यह नहीं कहता कि यह ग़लत है मगर इससे शान्ति नहीं मिलती, अन्तिम अवस्था नहीं आती। जिस प्रकार सोने के समय हम सब कुछ भूल जाते हैं मगर हम रहते हैं। सोने के समय हम गहरी नींद में जो गहरी समाधि होती है हमें अपनी होश नहीं होती मगर जो नाम जपता है और जब वह इस भेद को पा जाता है वह सब कुछ भूल जाता है मगर उसकी अपनी Supermost Consciousness मौजूद रहती है। इस वास्ते हम तुम सब उस मालिक के अंश हैं। हम उस मालिक से यहां आये हैं और इस संसार में फंस गये हैं और फिर दुख सुख उठाते हैं। कोई पु-

कोई भाई और कोई धन के लिए दुखी है। कौन बरी है ? संत बरी हैं ? मैं बरी हूं ?

मैं अपनी आत्मा से कई बार प्रश्न करता हूं कि तू लोगों को उपदेश करता है। क्या तू इच्छा रहित हो गया है ? अगर आज मेरी रोटी का अपना प्रबन्ध न होता तो मैं शायद ऐसी बातें न कर सकता। दाता ने मुझपर दया कर दी। मेरे हालात favourable हो गये। लड़का लायक हो गया। कटनी वाले, रुपये भेज देते हैं। मेरे घर का निर्वाह चलता है। पेन्शन मिलती है, वह मैं मंदिर को दे देता हूं तब मैं यह बातें बताता हूं। आपको मैं सच्ची बात कहता हूं झूठ नहीं बोलता। अगर आज मेरी रोटी का प्रबन्ध न होता तो पता नहीं कि मैं क्या करता। इसलिए मैं सदा सबको कहता हूं कि काम करो। राम राम पीछे से पहले अपनी रोटी के सामान के लिए कर्म करो सबसे बड़ी भक्ति यही है। तुम्हारे बच्चे पैदा होते हैं, वे सबसे पहले क्या चाहते हैं ? राम राम जपते हैं ? वे तो गुड़सत मांगते हैं। जब बच्चा पैदा होता है तो वह मां से दूध मांगता है। सबसे पहले मानव का क्या कर्त्तव्य है ? राम राम जपना नहीं। यह ग़लत है। यह अज्ञान है,

unnatural बात है। हर एक मानव के लिए सबसे पहला कर्त्तव्य यह है कि वह अपनी रोटी आप कमा कर खाये। जब तक वह पढ़ता है और बच्चा है मां बाप उसकी सेवा करते हैं जब वह जवान हो जाता है तो उसका कोई अधिकार नहीं कि बाप, या भाई का पैसा खाये। जो ऐसा करते हैं वे दोषी हैं। जो मां बाप संतान से पैसा चाहते हैं वे भी दोषी हैं। अगर आपके पास नहीं है और आप कमा नहीं सकते तो फिर आपकी संतान का कर्त्तव्य है कि वह आपकी रोटी कपड़े, बीमारी और रहने का प्रबन्ध करे। मैं दावा नहीं करता कि जो कुछ मैंने समझा है यही बात ठीक है। मगर तुम स्वयं सोचने वाले हो, स्वयं सोचो। जब बच्चा पैदा होता है तो प्रकृति ने उसके अन्तर क्या चीज़ भरी हुई है ? भूख। जब वह पैदा होगा तो सबसे पहले वह कुछ खाने को मांगेगा। मां दूध देगी। इस बास्ते सबसे पहला धर्म क्या हुआ ? राम राम जपना धर्म नहीं है। कमाना, पेट की भूख को मिटाना, अपनी कमाई करना, और पेट भरना, यह मानव का पहला धर्म है। हमारे गृहस्थियों के क्या दुख हैं ? लड़का जवान है लेकिन

कमाता नहीं। बाप के पास इतना धन नहीं वह तंग आया हुआ है। कई बूढ़े हो जाते हैं। अपने पास कुछ नहीं। बच्चे भी कहते है कि कब मरे तो विपत्ति समाप्त हो जाये।

नाम की कई पीड़िएं, हालतें या दर्जे हैं। जो नाम जपना चाहता है और असली नाम तक पहुंचना चाहता है, सबसे पहले उसे सांसारिक जिम्मेदारियें पूरी करनी चाहियें। वह मोह माया को तब छोड़ेगा जब उसके पेट में रोटी होगी। जब उसके खाने का सामान ही नहीं है तो वह राम राम जपे चाहे न जपे। उसका भाग्य है। मालिक करे कि कोई भिखारी पर दया कर देवे मगर अपनी हिम्मत से काम लेना चाहिये। इस वास्ते जब दाता दयाल ने मेरे छोटे भाई को नाम दिया था तो वह सातवीं कक्षा में पढ़ता था। नाम दे दिया, क्या कहा ? नाम जपना नहीं। तुम्हारे लिए असली नाम life means work and work means life है, अर्थात "काम का अर्थ जीवन और जीवन का अर्थ काम" उसे आज्ञा थी कि १६ घण्टे काम करो, दो घण्टे प्रातः सायं टट्टी पैशाब और रोटी खाने के लिए और ६ घण्टे

रात को सोओ। उसने इस पर अमल किया। Non-matric लड़का था। यहां तक उन्नति की, कि राय साहिब हो गया और Traffic Manager of Railways हो गया। कभी किसी ने सुना है कि Non-matric लड़का Traffic Manager of Railways हो सकता है। यह गुरु की आज्ञा का पालन था इसलिए संतमत में "गुरु जो कहे सो हितकर मान" तब तुम्हारा कल्याण होगा। ऐसा एक शब्द है।

जो गुरु तुम्हें अपने स्वार्थ, डेरे, और काम के लिए हिदायत करता है वह गुरु, गुरु नहीं है। गुरु वह है जो दूसरे आदमी के जीवन को बनाये। अगर अपने काम के लिए वह धोखा, चालाकी करके संसार को अपने पीछे लगाता है, वह गुरु नहीं है। वह ठग है। शेष लेना देना रहा, यह संसार का व्यवहार है। जिससे मैंने लेना है, मैंने लेना है, जिसको मैंने देना है मैंने देना है। मैं इस परिणाम पर आया हूं।

सिमिट सिमिट जल भरे तलाबा, वैसे ही नाम सुमिरना।
मन में शुभ गुन रस रस भरना, फिर आनन्द से मरना।

मन के अन्तर शुभ विचार रखा करो। आप-लोग मेरे पास या कहीं जाकर घण्टा भर सत्संग सुन गये और वाह-वाह कर गये परन्तु घर जाकर तुम्हारे मन की दशा खराब है। उससे लड़, किसी के साथ धोखा कर। यह नाम का सुमिरन नहीं है। इसीलिए यह नाम सबको नहीं दिया जाना चाहिए। सन्तों की शिक्षा अनुसार।

विषयों से जो होय उदासा परमार्थ की जा मन आसा।
धन संतान प्रीत नहीं जाके, खोजत फिरे साध गुरु जागे॥

यह नाम ऐसे आदमी को मिलना चाहिए। सब से पहले सदाचार है। मैंने सब बातों को जानकर इसलिए यह मानवता मंदिर बनाया और इस अपनी जगह का नाम "इन्सान बनो" रखा। जो आदमी पहले इन्सान नहीं बना, उसका जीवन नियम पूर्वक नहीं है. वह किसी गुरु के दरवाजे पर लाख पड़ा रहे, उसके पांव को धो-धोकर पीता रहे, उसे कभी लाभ नहीं होगा। जो आदमी अपने कर्तव्य को पूरा करता है, कमाता है और मोह माया से अलग रहता है वही मानव और सब कुछ है। वही सुमिरन करेगा,

दूसरा नहीं कर सकता। जब तक तुम्हारा अमल ठीक नहीं है तुम्हारा बेड़ा पार नहीं है।

जन्म मरन छिन छिन है प्रानी, छिन छिन योगी वासा।
जो कोई सुमिरे नाम गुरु का, पड़े न यम की फांसा॥

संसार वाले इस शब्द को पढ़कर यही करेंगे, कोई राधास्वामी-राधास्वामी, कोई पांचनाम-पांचनाम, कोई वाहेगुरु-वाहेगुरु और कोई सतनाम करता रहेगा। इसका कोई लाभ नहीं। एक आदमी चाहे मन से अजपाजाप से राम-राम, राधास्वामी-राधास्वामी करता रहता है, वह यम की फाँस से नहीं छूट सकता। यह तुम्हारा मन है। जब तक कोई इन्सान इस मन के रूप को नहीं समझता और मन की शक्लों और विचारों में फंसा हुआ है उसका तो बाप भी किसी तरह तर नहीं सकता। वह आवागवन से नहीं बच सकता। यह मेरा अपना अनुभव है। चाहे कोई गुरु किसी को मरते समय लेने के लिए आये क्योंकि वह केवल उसके मन का विचार है, जो रूप बनाकर सामने आ जाता है। मैं स्वयं चकित हूं। जब आदमी मरते हैं तो वे कहते हैं, बाबा आया, कोई कहता है, घोड़ा लेकर आया कोई कहता है,

पालकी लेकर आया लेकिन मैं तो था नहीं और न ही मुझे पता होता है। अगर मैं यह सच्ची बात पब्लिक को नहीं बताता, तुम बताओ कि मैं धोखेवाज़ हूं या कि नहीं ? इसलिए मैं सारे गुरुओं को, कोई भी महात्मा हो, जिसने इस बात को परदे में रख कर लोगों से धन इकट्ठा किया और अपने सगे सम्बन्धियों को सोंपकर चले गये, मैं कहुंगा कि इनमें से कोई भी न संत था और न कोई गुरु है। मैं निर्भय होकर साफ बात कहता हूं। हम गृहस्थियों को मूर्ख बनाकर लूटा जा रहा है क्योंकि काम तो केवल तुम्हारे विश्वास और अपनी समझ ने करना है। जितना खेल है यह तुम्हारे, मेरे या दूसरों के अपने मन का है।

नाम है मंगल सुख की खानी, नाम भक्ति का दाता।
जो कोई पीवे नाम सुधारस, रहे नाम मद माता।

असली नाम बिल्कुल और है। यह जो हम ज़वान से करते हैं, यह मन को इकट्ठा करने के लिये करना चाहिए। मैं अभी तक भी सुमिरन करता हूं और गुरु रूप का ध्यान करता हूं। मगर जो मेरे अन्तर रूप प्रकट होता है मैं उसे महर्षि शिवब्रतलाल

जी का रूप नहीं समझता, मैं उस रूप को पूर्ण मानता हूं । आप लोगों को एक निजी राय बताता हूं । मैं नहीं कहता कि तुम मुझे गुरु मानो और मेरा ध्यान करो । जहाँ भी तुम्हारा विश्वास है वहां सच्चे हो कर चलो । तुम्हारे सांसारिक जीवन में, अगर तुम्हें सच्चाई की इच्छा है तो सच्चाई मिल जायेगी, रुपये की इच्छा है तो रुपया आ जायेगा अर्थात जो कुछ तुम चाहोगे तुम्हें मिल जायेगा ।

राधास्वामी गुरु ने विधि बताई, अन्तर विरती जमाओ।
सुरत शब्द की करो कमाई, नाम राग धुन गाओ॥

वह कहते हैं, राधास्वामी गुरु ने ढंग बता दिया । गुरु ने तुमको पार नहीं करना । तुम्हारा विश्वास श्रद्धा तुम्हारी सहायता करता है । मैं अगर कुछ करता हूं तो यही करता हूं कि Good wishes देता हूं, शुभ भावना देता हूं । दूसरे का भला चाहता हूं । दुखी जीव मेरे पास आते हैं, दाता ! सच्चे दिल से चाहता हूं कि इन विचारों का दुख दूर हो जाये, क्योंकि तूने काम दिया था । जो कुछ होता है, आपके विश्वास से होता है ।

मेरी आयु तरयानवे साल है । पता नहीं मैं कब तक जीवत हूं । यह उसकी इच्छा है, मुझे पता

नहीं। तुमने क्या करना है ? अपनी नीयत को साफ रखकर मोह, माया और अज्ञान को काटना है अर्थात उनमें फंसना नहीं। मान लो, कि एक आदमी की स्त्री मर गई उसके बच्चे रह गये। यह ठीक है कि वह दुखी है, लेकिन अगर वह प्रातः से सायंकाल तक रोता ही रहे, हाय ! मेरी स्त्री मर गई, हाय ! मेरी स्त्री मर गई, हाय ! मेरा पुत्र मर गया। वह ठीक नहीं। यह मरना जनमना, और जीना सब अपने अपने कर्मों के अधीन है।

जब मैं अकेला होता हूं तो कई बार सोचता हूं फकीरचन्द ! शायद जो कुछ तुमने समझा हो, यह ग़लत हो। क्या तेरी इस ग़लत शिक्षा से संसार की हानि तो नहीं होती ? यह प्रश्न मेरे दिल में पैदा होता है। इस वास्ते मैं कहा करता हूं, अगर दूसरे महात्मा समझते हैं कि मैं ग़लत हूं तो मेरा खण्डन करदे। मैं यह तो नहीं चाहता कि लोग मेरी हां के साथ हां मिलायें। में तो अपना कर्म भोगता हूं। क्योंकि मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊंगा, गुरु महाराज महर्षि शिवब्रतलाल जी और बाबा सावन सिंह जी ने कहा था कि निर्भय होकर काम कर

जाना और शिक्षा को बदल जाना। मैं अपनी समझ अनुसार बदल चला। पता नहीं मैंने बुरा किया या ठीक किया। मगर इतना मैं कहे देता हूं कि मेरी नीयत साफ है। अगर इस संसार में इस समय तक कोई सच्चाई है, जो मैंने समझी है, वह यही है कि ऐ मानव! तुझे। जो कुछ मिलेगा, तेरी नीयत तेरी मुराद का फल मिलेगा। रह गया मैं, कोई बात मेरे मुँह से निकल जाती है। संसार वाले यह समझते हैं कि फकीर चन्द करता है। यह बात नहीं है, जैसा होना होता है, वह मेरे मुँह से निकल जाता है। क्यों ?

सांच बराबर तप नहीं झूठ बराबर पाप।
जिसके हृदय सांच है तिसके हृदय आप॥

क्योंकि मेरे अन्तर में कोई कपट, छल, फरेब धोखा नहीं है इस वास्ते मेरा हृदय साफ है। शीशे में चीज़ दिखाई देती है। अगर शीशा साफ है तो जो चीज़ उसके सामने आयेगी वह उसे पूरी तरह देख लेगा। क्योंकि मेरे मन का शीशा यद्यपि सौ प्रतिशत साफ नहीं मगर पचानवे प्रतिशत साफ है। जो कोई बात होने वाली होती है, स्वाभाविक मेरे मन

पर पड़ती है, वह कह देता हूं और हो जाती है। लोग समझते हैं, मैं करता हूं, मैं कौन करने वाला हूं। न मैं कर सकता हूं और न मुझमें शक्ति है। हां! शुभ भावना देता हूं और आप लोगों का भला चाहता हूं।

तुम खुश रहो। मैं दाता के आगे प्रार्थना करता हूं दाता! सच्चाई के मार्ग पर ले चल। प्रातः सायं क्या करता हूं? अपने आपको उसके सपुर्द करता हूं। रात्री को सोता हूं तो अपने आपको उसके हवाले करता हूं। प्रातः उठकर उसे याद करता हूं। चलते फिरते उसका ध्यान रहता है। मेरी यह दशा है। मैंने कुछ निजी स्वार्थ नहीं रखा। जिसने पैदा किया है वह रोटी कपड़ा देगा।

जब दांत न थे तब दूध दिओ।
जब दांत दिओ तो क्या अन्न न देगा।

तुम स्त्रिएं घरों में रहती हो, पतिओं के साथ सच्चा प्रेम रखो। जो स्त्री पतिव्रता है उसे किसी अभ्यास या योग की आवश्यकता नहीं है। हमारे पुरान कहते हैं कि जो स्त्री स्वप्न में अपने पती की आज्ञा नहीं पालती, वह दूसरे जन्म में विधवा होगी।

उन्होंने कैसे लिखा, यह मुझे पता नहीं मगर लिखा हुआ है। यह नियम है। यह शास्त्रों में बड़े ऋषियों ने Research की है। जो आदमी बिना अपनी स्त्री पर शक करता है, वह भी दोषी है। वह बच नहीं सकता। जो आदमी तुम्हारे साथ नेकी करता है और तुम उसका उपकार नहीं मानते तो तुम्हें उसका दण्ड मिलेगा। घरों में शान्ति रखो। प्रेम का जीवन काटो बच्चों को सीधे रास्ते लगाओ। इस वास्ते मेरी सबसे पहली शिक्षा यह है कि अपने मानसिक और शारीरिक ब्रह्मचर्य को कंट्रोल में रखो। तुम्हारे 4, 4, पांच-पांच, छः छः बच्चे हैं, फिर भी तुम स्त्री पुरुष आपस में पति पत्नि की तरह रहते हो। भोग करते हो, तुम दोषी हो, स्त्रियें विषय भोगने के लिए नहीं हैं, बल्कि अच्छी संतात पैदा करने के लिए हैं। इस समय संसार में जितनी विपत्ति है यह हमारी खुदरौ संतान के कारण है, और हमने खुदरौ संतान पैदा की है। इसलिए अच्छी संतान पैदा करो। वच्चों के साथ प्रेम से रहो। छोटे बच्चों के साथ कठोरता मत करो। तुम्हारा गृहस्थ सुखी होगा जिसको इस संसार में

मुक्ति नहीं मिली "मरने के बाद मुक्ति की क्या आशा कर सकता है।

कबीर साहिब का एक शब्द है।

जीवत मुक्त नें होयें, मरे मुक्ति की आशा हो।
जीवत भरम की फांस न काटे मरे मुक्ति कहां होई हो।

इस वास्ते सत्संग की महिमा है। मैं इस संसार में इसी वास्ते आया हूं कि जो इस समय गुरुवाद पाखण्ड का जाल है, इससे गृहस्थियों को बचा जाऊं। मेरे मस्तिष्क में यह खबत है। पहले आदतों को बदलो फिर नाम की ओर जाओ। अपने अमल और नीयत को साफ करो। वह सबके काम करता है।

सब को राधास्वामी!

सत्संग हजूर परम दयाल जी महाराज मानवता मंदिर होशियारपुर।

दिनांक 12-11-78

मनसा होगी तेरी पूरी, मन से करले गुरु का ध्यान॥
मूल नाम गुरु नाम है, मूल रूप गुरु रूप।
मूल भजन गुरु शब्द का, गुरु निर्वान के भूप॥
गुरु की प्रीत हिये में धार, मिलेगा तब सच्चा गुरु ज्ञान।
तीरथ में है पत्थर पानी, व्रत में कठिन कलेश॥
वाद विवाद से मन हो चंचल, तत्व गुरु उपदेश।
करे जो गुरु की संगत प्राणी, वह फिर पड़े न भव की खान॥
गुरु विष्णु गुरु शिव की मूरत, गुरु को ब्रह्मा जान।
गुरु ब्रह्म गुरु परब्रह्म है, अपनी बुद्धि पिछान॥
गरु की भक्ति सब का सार है, और सब भरम अज्ञान।
भटक भटक कर भटका जग में, भटका बारम्बार॥
जाके मन में अटक समाना, जाय न भव के पार।

तू सोच समझ चित धार, बात यह सांची मन से मान ॥
राधास्वामी सतगुरु पूरे, धरा सन्त अवतार।
सुरत शब्द मत योग बताया, सार सार का सार ॥
बिन गुरु भक्ति ज्ञान नहीं पावे, सब संतन ने किया बखान।

राधास्वामी। मैंने एक दिन पहले यह शब्द सुना था। मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि फकीर चन्द ! तू प्रकट रूप में गुरु नहीं बना और न ही नाम देता है लेकिन तू गुरु का काम तो करता है, लोग तेरा बहुत मान करते हैं। तू बता कि तूने संतमत को क्या समझा ? यह जो कुछ यहां लिखा हुआ है क्या यह ठीक है ?

मैं अपनी आत्मा को साफ रखना चाहता हूं ताकि मुझ पर गुरु बनने का कोई पाप न रहे किसी से धोखा फरेब न हो। यहां लिखा हुआ है कि तेरी मनसा पूरी होगी तू गुरु का ध्यान कर। संसार में कितने गुरु हैं। एक पत्थर उठाओ तो दस गुरु निकलते हैं। वह कौन सा गुरु है जिसका ध्यान करने से तुम्हारी मनसा पूरी हो सकती है ? यह एक प्रश्न है जो मैं अपनी आत्मा को साफ रखने के लिए

अपनी ही आत्मा को सत्संग करा रहा हूं, आपलोगों को नहीं करा रहा हूं।

लोग मेरा रूप बना लेते हैं। स्कूल के लड़के मेरे उस रूप को डैस्क के नीचे बैठाकर विज्ञान का पर्चा हल करवा लेते हैं, मेरा रूप डूबते हुये को बचा लेता है, मरते समय ले जाता है या किसी की कोई और सहायता होती है लेकिन मुझे कोई पता नहीं होता। न मैं किसी के पर्चे हल करवाने जाता हूं, न किसी डूबते हुये को बचाता हूं न किसी को मरते समय ले जाता हूं और न किसी को दवाई बताता हूं। लोग मेरा ध्यान करते हैं। मुझे कई आदमी मिले, पूछने लगे, बाबा जी! क्या आप डाक्टर से दवाई लेते हैं? हां, लेता हूं। हम नहीं लेते। मैंने पूछा आप क्या करते हो? हम जब बीमार होते हैं तो आपको याद करते हैं, आप प्रकट हो जाते हैं और दवाई का नाम बता देते हैं। हम बाज़ार से दवाई ला कर खाते हैं और स्वस्थ हो जाते हैं। जब मैं बीमार होता हूं तो डाक्टरों के पास जाता हूं। कुछ दिन हुये बम्बई की एक निर्मला नाम की स्त्री श्रीनगर से अमरनाथ गई। वह वहां नदी

में नहाने गई। जब वह नहाने लगी तो पानी उसे दस बारह: गज बहाकर ले गया। वह लिखती है कि बाबा जी! आप आये, आपने मुझे बाज़ू से पकड़ा और किनारे पर ले आये और मुझे कहा कि अभी तूने बहुत काम करना है। उस स्त्री ने दो पेटियें, एक सेब और दूसरी आलूबुखारे की भेजीं और मुझे पत्र द्वारा पूछा कि मैंने और क्या काम करना है? अगर मैं वहां पर उसे बचाने गया हुआ होता तो उसे बताता। मैंने उन सेबों की ओर देखा तक नहीं, खाना तो एक ओर रहा। अगर मैं उन्हें खा जाता तो क्या मैं दोषी नहीं था? क्योंकि मैं तो उसे बचाने नहीं आया था। जो अज्ञान वश मुझे देता है, मैं उस आदमी से कोई पैसा या चीज़ नहीं लेना चाहता। समझ बूझ के साथ बड़ी खुशी से दो। यह मंदिर मेरा अपना नहीं है। पब्लिक का है और पब्लिक के काम आयेगा मगर मैं आप लोगों को धोखा नहीं देना चाहता और न ही धोखे में रखकर किसी से धन लेना चाहता हूं। मैं इसे दोष समझता हूं।

मैंने प्रण किया था कि इस मार्ग पर चलूंगा और जो कुछ मेरा अनुभव होगा वह संसार को बता जाऊंगा। हर एक धर्म, पंथ वाले ने अपना अलग २ मार्ग बताया। शिव पुराण वालों ने शिव को ऊंचा रखा, विष्णु पुराण वालों ने विष्णु को ऊंचा रखा, देवी पुराण वालों ने देवी को ऊंचा रखा और गुरुमत मैं इन गुरुओं ने गुरु को सबसे ऊंचा रखा। इससे मुझे विश्वास हो गया कि काम तो होते हैं और बहुत आदमी अपने २ गुरुओं से लाभ उठाते हैं। आप लोग भी उठाते होगें, मैंने दाता दयाल से लाभ उठाया! फिर गुरु कौन हुआ? मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि फकीर चन्द! वह गुरु कौन है जो तुम्हारी मनसा को पूर्ण करता है और जिसका ध्यान करने से तुम्हारे सब काम होते हैं? मैं सच्चाई बता जाना चाहता हूं कि अनुभव ने सिद्ध किया है कि वह गुरु इन्सान का अपना ही मन, विश्वास और श्रद्धा है। क्योंकि अगर मैं गुरु होता तो मुझे पता होना चाहिए था कि मैं वहाँ पर गया, मरते समय ले गया यही बात दाता दयाल ने कहीं हैं कि मन ही मानव का गुरु है मगर वह उसे समझता नहीं।

इस कारण इस मन को साफ कराने के लिए बाहर के पूर्ण पुरुष की संगत की अकश्यकता है जो आदमी को अपने मन को ठीक करने का मार्ग या ढंग बताये ।

यह मन समझन जोग, साधु यह मन समझन जोग ।
मन ही ज्ञान और मन ही ध्यान, मन ही मोक्ष और भोग ॥
मन में वेद को पढ़ते ब्रह्मा, शंकर करते योग ।
मन ही अन्दर सृष्टि व्यापी, मन ही में है रोग ॥
मन गोबिंद मन गोरख रूपा, मन ही योग वियोग ।
मन ही पानी मन ही अग्नि, मन ही आनन्द सोग ॥
मन ही गुरु है मन ही चेला, मन ही ब्रह्म संयोग ।
मन ही का व्यौहार जगत में, नाहिं जाने लोग ।

यह मेरे गुरु महाराज दाता दयाल का शब्द है । अर्थात जितना खेल है सब तुम्हारे अपने ही मन तथा आत्मा का है । पहला शब्द था ।

मनसा होगी तेरी पूरी, मन से कर ले गुरु का ध्यान ।

वह किस गुरु का ध्यान करे ? मैं अनामी धाम से इसीलिए आया हूं कि बता जाऊं कि इन धर्मों और पंथों ने इतना पाखण्ड बनाया हुआ है कि हम

गृहस्थियों को मूर्ख बनाकर लूटा जा रहा है, मत्थे टिकवाये जा रहे हैं और अपनी सम्पत्तियां बनाकर अपने पोतों और दोहतों को दी जा रही हैं। संसार जानता है। मैंने आपको सिद्ध कर दिया कि कोई बाहर का गुरु आ कर किसी की सहायता नहीं करता। अपने डेरे, सम्पतियें, नाम बड़ाई बनाने के लिए हमें धोखा दिया गया है। (गुरु तुम्हारा मन है) मैं समझता हूं जितना अज्ञान हमें इन धर्म वालों ने दिया उतना किसी ने नहीं दिया। गुरु का असली रूप न जानने से ही धर्मों और पंथों के झगड़े हैं गुरु तुम्हारा मन है। मगर इस अज्ञान को प्राप्त करने के लिए तुम्हें बाहर के गुरु की आवश्यकता है। इस वास्ते स्वामी जी ने भी कहा है कि पूरे गुरु को ढूंढो।

गुरु तू पूरा ढूंढ तेरे भले की कहुं।

गुरु नानक साहिब ने भी पूरे गुरु, की बात कही है। पूरे गुरु, का अर्थ पूरा ज्ञान, पूरी समझ और पूरा विवेक है मगर यह जल्दी नहीं आती। हर एक आदमी के लिए यह संतमत नहीं है।

अब मैं प्रश्न करता हूं कि जो दूसरे गुरुओं का ध्यान करते हैं क्या उनके काम पूरे नहीं होते ? उनके काम भी पूरे होते हैं। हर एक के गुरु का रूप उनकी सहायता करता है। मुझे जो सत्संगी मिलते हैं सब कहते हैं। जो असल में शक्ति है वह तुम्हारे मन के विश्वास में है। क्योंकि इन्सान अपने मन के ऊपर कोई विश्वास नहीं कर सकता इसलिए मन को सहारा देने के लिए बाहर के किसी न किसी रूप का सहारा लेना पड़ता है। अगर बाहर का कोई पूर्ण पुरुष मिला हुआ है तब तो तुम्हें मंजल पर पहुंचा देगा, अधूरा है तो सिद्धि शक्ति आ जायेगी, पुत्र हो जायेगा और धन भी मिल जायेगा मगर इस मन के चक्कर से तुम नहीं निकल सकते, जब तक किसी को पूरा गुरु न मिल जाये अर्थात पूरी समझ न मिल जाये। मन के चक्कर से कौन निकलना चाहता है ? मेरे पास कितने आदमी संसार की आशाओं को लेकर आते हैं। यह जो एक आदमी आया हुआ है, इसका कोई मित्र है। उसका कोई लड़का नहीं है लोग मुझसे प्रसाद ले जाते हैं। मेरे पास पचास २ साल की चार स्त्रियें आई जिन्हें मासिक धर्म नहीं आता था।

मुझसे प्रसाद ले गई और उनके संतान हो गई। मेरी अपनी लड़की के विवाह को चौबीस साल हो गये। मैंने उसे कई बार प्रसाद दिया, उसके कोई बच्चा नहीं हुआ। क्या मैं बच्चा देता हूं ? कौन देता है ? ऐ इन्सान ! तेरा अपना कर्म और विश्वास काम करता है। क्योंकि दाता दयाल और बाबा सावनसिंह जी महाराज ने मेरे जिम्मे कर्तव्य लगाया था कि चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना। मैं क्या शिक्षा बदलूं ? एक रूप पर विश्वास रखो और उस रूप को पूरा समझो। क्योंकि तुमने अपने मन से उसे पूरा समझा हुआ है, तुम्हारे अपने ही मन का विचार और विश्वास तुम्हारा काम करेगा न कि बाहर का गुरु करेगा। यह बिल्कुल सच्ची बात है। जिसकी इच्छा करे मेरे सत्संग में आये जिसकी इच्छा न करे न आये। जिसकी इच्छा करे मेरी बात को सुने, मेरी कोई किताब पढ़े, जिसकी इच्छा न करे वह न पढ़े जिसकी इच्छा करे मंदिर में चार पैसे दे जाये जिसकी इच्छा न करे वह न दे। मैं अपने चार दिन के जीवन को नष्ट करके नहीं जाना चाहता। न ही किसी को धोखा फरेब देना चाहता हूं।

किस गुरु का ध्यान करना है ? जहां तुम्हारा विश्वास बैठता है उसे पूरा समझो । इस शब्द में भी यही आया है । हिन्दु शास्त्र भी यही कहते हैं ।

गुरु ब्रह्मा, गुरु विष्णु गुरु देव महेश्वरः ।
गुरु साक्षात पर ब्रह्म तस्मै श्री गुरु वे नमः ।

तुम्हारा इष्ट पूर्ण है । उधारणतः एक स्त्री व्यवचारिनी है, जब उसका लड़का उसे देखेगा तो उसके मन की दशा और होगी क्योंकि उसने उस स्त्री में अपनी मां का इष्ट रखा हुआ है । इष्ट मां पूर्ण है । मां पवित्र शब्द है इस वास्ते मां की बुराई उसके मस्तिष्क में नहीं आयेगी दूसरा आदमी उस स्त्री को बहन समझता है, उसकी और दशा होगी, उसी स्त्री को उसका पति देखता है उसकी दशा और होगी और उसके यार के मन की दशा और होगी तो क्या सिद्ध हुआ ? कि जो कुछ तुम्हें, मुझे या किसी को मिलता है वह तुम्हरे अपने ही विचार और विश्वास का फल मिलता है । जो कुछ किसी को मिला वह उसके विश्वास और श्रद्धा का ही फल मिला । ऐ इन्सान ! तेरे मन के विचार में बड़ी

शक्ति है। मैंने सच्चाई वर्णन करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। आपको खोपड़ी में न बैठे तो मैं जिम्मेदार नहीं हूं।

क्योंकि मेरे जिम्मे कर्तव्य था कि शिक्षा को बदल जाना इसवास्ते मैंने शिक्षा को बदला है कि ऐ इन्सान ! अपने विचार को ठीक रख। सबसे पहले संतान पैदा करते समय अपने विचार को ठीक रखो। मेरे पास हर रोज़ दुखी जीवों के पत्र आते हैं। वे संतान से दुःखी हैं। वे क्यों दुखी हैं ? क्योंकि उन्होंने संतान को संतान के विचार से पैदा नहीं किया है। विषय विकार का जीवन था। बच्चे पैदा हो गये। अब जो Uncalled for Children बिना बुलाया बच्चा आया है उससे तुम यह आशा करो कि वह तुम्हारा आज्ञाकारी रहेगा ऐसा नहीं हो सकता और न होगा। अपने कर्म का फल आप भोगो, तुम्हें कोई नहीं बचा सकता। मैं क्यों कहता हूं ? अगर मैं दूसरों के उदाहण दूंगा तो वे नाराज़ हो जायेंगे इसलिए अपना उदाहरण देता हूं। अपने घर का उदाहरण देकर अपना मुँह काला करके तुम लोगों को सच्चाई वर्णन किये जाता हूं।

मेरी एक लड़की है। जब मां उसे कुछ कहती तो वह मां को जवाब दे देती। वह पढ़ी लिखी है और एक अच्छे ओफिसर की स्त्री है। मेरी स्त्री मुझे कई बार कहती थी कि तू लोगों को उपदेश करता है, अपनी लड़की को उपदेश नहीं करता। मैंने एक दिन लड़की से पूछा बेटी! क्या बात है? वह रो पड़ी और कहने लगी पिता जी! पता नहीं मुझे क्या हो जाता है। जब माता जी कुछ कहती है तो मेरे मुँह से निकल जाता है। पीछे से मैं दुख मनाती हूं। मैं जानता था कि वह ऐसा क्यों करती है। मेरे संतान थी। मुझे संतान की आवश्यकता नहीं थी। मेरी स्त्री को आवश्यकता नहीं थी। मैं कामी हुआ बच्चा पेट में आ गया। मुझे याद है मेरी स्त्री ने पहले दो महीने दवाई खाई कि Abortion हो जाये मगर Abortion नहीं हुआ। जिस आने वाले बच्चे को मां Welcome नहीं करती वह मां का कहना कैसे मानेगा। यह शिक्षा है जो मैं बदले जा रहा हूं। मैं कहता हूं कि तुम राम राम बेशक न जपो अपने विचार को ठीक करो। क्यों जिन बड़े २ आदमियों, महात्माओं ने राम राम जपा, वे बहुत

बुरी मौत मरे और बहुत कष्ट उठायें। इसलिए मैंने मानवता मन्दिर बनाया है केवल इस विचार से कि शिक्षा को बदल जाऊं। मेरे सिर पर गुरु ऋण है। मैं यह काम नहीं करना चाहता था। इस लिए मैं १९४२ में बाबा सावन सिंह के पास गया था। मैंने कहा मैं यह काम नहीं करना चाहता। कहने लगे क्यों? मैंने कहा महाराज! मैंने सच्च कहना है। संसार सच्चाई के पीछे डन्डा लिए फिरता है। वह पवित्र विभूति थे। वह कहने लगे फकीर! मुझसे सच्च नहीं कहा गया क्योंकि संसार सच्च का अधिकारी नहीं है दूसरे मेरा डेरा था, मैं यह जानता हूं तू निर्भय होकर काम कर, मैं तेरा संरक्षक रहूंगा। इसलिए मैं शिक्षा को बदले जा रहा हूं।

गुरु की महिमा क्या है? प्रेम और विचार से एक रूप को मान लो और उसे पूरा समझ लो। जिस प्रकार लड़के ने मां को अपनी मां मान लिया और उसके दोष अर्थात मां के दोष उसके सामने नहीं आते, जब कोई विपत्ति आती है तो हम कहते हैं हाय मां! जब हमें संसार में कोई दुख आता है चाहे हम बूढ़े

या जवान हों, हमारे मुँह से निकलता है हाय मां ! क्यों ? क्योंकि मां का इष्ट था। इसलिए गुरु इष्ट है। जो आदमी गुरु के कामों को देखता रहता है, वह दोषी है। वह मंजल पर नहीं पहुंच सकता। गुरु पूर्ण है। उसमें पूर्णता देखो। मगर उसे अपने अन्तर समझो बाहर मत समझो। जो आदमी इस ढंग से अपने इष्ट का ध्यान करता है उसकी मनसा पूरी होती है, अवश्य होनी चाहिए। लोगों की मनसा पूरी होती है और मेरी भी होती है। मैंने इसका प्रमाण आपको दे दिया कि मैं कही जाता आता नहीं। हजारों लोग मेरा ध्यान करते हैं। उनका जितना प्रेम होता है मेरी मूर्ति उनके अन्तर बन जाती है और उनके काम बन जाते हैं जहां तक उनके अपने निजी काम का सम्बन्ध है। मेरे हर रोज के अनुभव हैं। जिनका ध्यान बन जाता है उनके सब काम बन जाते हैं। मैं नहीं कहता कि तुम मेरा ध्यान करो। मैं तो कुछ नहीं करता। मैं गुरु नहीं हूं। मैं तुम लोगों को ज्ञान, समझ और विवेक देता हूं ताकि तुम भटका न खाओ और जगह जगह टक्करें न खाओ। क्यों भटकते फिरते हो। इस भटकने में क्या रखा

है। जो कुछ है वह तुम्हारे मन के अन्तर रखा है।

मनसा होगी तेरी पूरी, मन से कर ले गुरु का ध्यान।

मैंने सिद्ध कर दिया कि जो कुछ दाता ने लिखा है यह सोलह आने सच्च है। इसमें कोई झूठ नहीं। मगर उसके साथ जो अनुपान हैं वे भी पूरे होने चाहिएं। एक आदमी गुरु गुरु तो करता रहता है मगर उसके विचार गन्दे हैं, चार-सौ-बीस और हेराफेरी करता है। दो घण्टे अभ्यास भी करता है मगर सारा दिन किसी के साथ लड़ाई, शत्रुता झगड़ा, किसी के साथ मुकद्मा तो फिर वह आशा करे कि उसकी मनसा पूरी हो जायेगी, यह नहीं हो सकता। क्योंकि वह सारा दिन जो कुछ सोचता रहता है उसका भी तो प्रभाव होना चाहिए। एक आध घण्टे या वीस मिण्ट के अभ्यास से जो तुममें शक्ति आती है वह उतनी शक्तिशाली नहीं जितना तुम सारा दिन सोचते रहते हो, यह हो, यह हो और यह हो।

मूल नाम गुरु नाम है. मूल रूप गुरु रूप।
मूल भजन गुरु शब्द का गुरु निर्बाण के भूप॥

गुरु को क्या समझना चाहिए? गुरु को मोक्ष, धन अर्थात सब कुछ देने वाला समझना चाहिए तब

तुम्हारा काम बनेगा। अगर गुरु पर ऐसा विश्वास नहीं है तो गुरु धारण करने की कोई आवश्यकता नहीं। यह मूर्खता है जो लोग गुरुओं के पीछे दौड़ते फिरते हैं। हम गुरु के पास क्यों जायें ? वहां से हमें गुर मिलता है। गुरु बात बताता है। वह जो बात बताता है, बाणी कहता है और समझ देता है वह गुरु है। कोई भी बाहर का गुरु गुरु नहीं। गुरु तो इन की बाणी है जो ये हमें उपदेश दे गये और बाणी समय अनुसार की जाती है। जो गुरु पांच सौ साल पहले प्रकट हुआ उसकी बाणी, उपदेश इस समय काम नहीं करता। वह उसी समय के लिए थी। अब वह काम नहीं करेगी ज़माने के बदलने के साथ सदा गुरुमत भी बदलता रहता है।

गुरु ने चोला बदलया सिदक न हारे सिख।

संसार ने यह समझा हुआ है कि अगर एक गुरु मर गया तो उसकी जगह जो दूसरा गुरु बैठा है उसने चोला बदला है यह ग़लत है। गुरु नाम ज्ञान, समझ और विवेक का है जिससे इन्सान की मनो-कामनायें पूर्ण हों, उसे शान्ति मिले और उसका

आवागवन समाप्त हो जाये। हर ज़माने के हालात अलग २ होते हैं इसलिए गुरु सदा समय समय पर प्रकट हुआ करते हैं जो उस ज़माने के हालात अनुसार जीवों को उपदेश करके अन्तिम अवस्था पर पहुंचाते हैं। हमारे ज़माने में पहले क्या था ? राजा का शासन था और हिन्दु राजा को ईश्वर का रूप समझते थे। अब क्या है ? अब राजाओं के पुतले जलाये जाते हैं। क्या अब पिछली आज्ञा काम आती है ? तुम्हारी बात को कौन सुनेगा। पिछला शासन कहां गया ? जब अपने इष्ट को पूर्ण मानोगे तब मनसा पूर्ण होगी। मैं नहीं कहता कि मेरे रूप को पूर्ण मानो। जिसे तुम चाहते हो उसे पूर्ण मानो। उसे ऐसा मत समझो कि यह अमुक है, अमुक का लड़का है अमुक जगह पैदा हुआ था, इसने यह काम किया और यह अमुक जगह मर गया। जो आदमी गुरु को ऐसा समझता है वह पार नहीं जा सकता। यही बात आदगुरु संतों में आदसंत कबीर साहिब ने कही है।

गुरु को मानुष जानते ते नर कहिए अन्ध।
दुखी होंयें संसार में आगे यम का फंद॥
गुरु किया है देह को सत्गुरु चिन्हा नाहीं।
कहैं कबीर ता दास को तीन ताप भरमाई॥

हम क्यों सुखी नहीं ? क्योंकि हम लोगों ने गुरु को इन्सान समझा हुआ है। इन्सानी गुरु के पास जाकर गुरु के असली रूप को समझने की आवश्यकता है। बाहर का गुरु असली और निजगुरु के रूप को बताता है। इसवास्ते सब से पहली महिमा बाहर के गुरु की है अगर बाहर का गुरु न हो तो यह समझ तुम्हें आ नहीं सकती। क्योंकि यह समझ कोई गुरु नहीं देता इस लिए इस समय प्रकृति ने मेरे मस्तिष्क को हिलाया और शायद इसी वास्ते बाबा सावनसिंह जी महाराज और दाता दयाल ने मुझे कहा हो कि तू निर्भय होकर काम करजा।

गुरु की प्रीत हिये में धार मिलेगा तब गुरु ज्ञान।

वह कहते हैं गुरु की प्रीत अपने हृदय में धारो तब तुम्हें सच्चा ज्ञान मिलेगा। तुम मेरे पास आये हो अगर तुम्हें मुझपर विश्वास ही नहीं है, प्रेम ही नहीं है तो मैं चाहे लाख कहता रहूं तुम पर क्या प्रभाव होगा कुछ प्रभाव भी नहीं होगा इस वास्ते सन्त जो असली सच्चे सन्त हैं वे अपने आप में कोई दोष लगाते हैं ताकि हर एक आदमी उनके पास न जा सके। कोई न कोई

ऐसा खेल खेल देते हैं कि लोगों को उनसे घृणा आ जाती है। यह पिछले ज़माने का दस्तूर था। जबतक पूरा विश्वास नहीं है तब तक कोई लाभ नहीं। मेरा अपना विचार यह है कि विश्वास कराना गुरु का काम है। वह गुरु अर्थात बाहर का आदमी गुरु नहीं है जो चेले की बुद्धि को निश्चयत्मिक नहीं कर सकता अर्थात उसे अकली तसल्ली और सच्चाई का विश्वास नहीं करा सकता। यह उसकी शक्ति में नहीं है मगर उसे समझा कर उसकी बुद्धि को ठीक कर सकता है। अपनी बाणी, और वर्णन शैली से उसे विश्वास करा सकता है कि जो कुछ गुरु ने कहा है यह ठीक है। अब उस पर अमल करना या न करना यह तुम्हारा कर्तव्य Duty है। जब बाबा सावनसिंह जी महाराज के पास कोई अम्यास के लिए जाता तो कहा करते थे "लद्दो नाल लदाओ नाल घर छडन जाओ" अर्थात ऊंट को लादो साथ लदाओ फिर घर छोड़ने भी जाओ। वे यह उदाहरण दिया करते थे। बात वही है जो मैं कहता हूं। सत्संग की महिमा यह है कि सत्संग में आमल गुरु दूसरे की बुद्धि को निश्चयात्मिक बना देता है। गुरु की संसार

में अगर कोई दया है तो बस यही है। तुमने गुरु की दया यह समझी है कि कोई गुरु तुम्हारे अन्तर प्रकट हो गया। यह पाखण्ड का जाल और धोखा है। मैं तुम्हारे जैसा इन्सान हूं। मुझे दाता दयाल ने शब्दों में बहुत कुछ कहा मगर ज़वानी ऐसा सत्संग नहीं दिया। गुरु की क्या दया होती है ? तुम लोगों ने गुरु की दया को क्या समझा ? मेरे पास बहुत आदमी आकर कहते हैं महाराज ! दया करो। गुरु क्या दया कर सकता है ?

जब दया गुरु की हुई चरनों की भक्ति मिल गई।
सब निवलता मिट गई, निश्चय की शक्ति मिल गई॥

जिस गुरु के बचनों से तुम्हारी निबलता अर्थात Weakness if mind चली जाये वह गुरु है। यही गुरु की दया है कि बुद्धि को निश्यत्मिक कर देता है।

आ गये सत संग में, और संग सत का हो गया।
दुर्मति जाती रही, जब गुरु के मत का हो गया॥

मत राये को कहते हैं। जो गुरु ने राय, सलाह दी उसकी राये को तुमने समझकर उस पर अमल किया तब तुम्हारा बेड़ा पार है।

प्रेम का प्याला पिया, पीते ही मतवाला बना।
मन की सुध बुध खो गई, भोला बना भाला बना॥
पांव में मस्तक नवाया, चित से धारा गुरु का रंग।
कीट जिसको पहिले सब, कहते थे अब ठहरा भिरंग॥

गुरु का काम बात को साफ करके समझा देना है शर्त यह है कि दूसरा आदमी समझने के लिए आता हो। तुम संसारी हो। तुम्हारे दुखों का इलाज केवल यही हैं कि ध्यान करा, ध्यान करो। मांगो मिलेगा, अवश्य मिलेगा। कोई शक्ति नहीं जो रोक सकती है शर्त यह है कि तुम्हारा ध्यान बन जाये। अगर तुम्हारा ध्यान नहीं बनता तो कोई गुरु, कुछ नहीं कर सकता। तुम्हें जो कुछ मिलना है तुम्हारे अपने मन के विश्वास, श्रद्धा और ध्यान से मिलना है। तुम गृहस्थी हो। मैं नहीं कहता तुम मेरा ध्यान करो। धन चाहते हो तो लक्ष्मी का ध्यान करो। अगर बुद्धि चाहते हो तो सरस्वती का ध्यान करो और अगर ज्ञान चाहते हो तो शिव जी का ध्यान करो। मैं किसी धर्म के विरुद्ध नहीं हूं। मैं असूल और सच्चाई वर्णन करता हूं हमारे शास्त्र बिल्कुल सच्चे थे। उन्होंने लक्ष्मी, सरस्वती और शिव जी

की मूर्तिएं बनादीं ताकि जीवों का विश्वास बैठ जाये। इन सन्तों ने सबका विश्वास तोड़ दिया, सबका खण्डन कर दिया मगर पब्लिक को सच्चाई नहीं बताई। मेरी Research का क्या कारण है ? मैं ब्रह्मण हूं। कौन आदमी अपने पूर्वजों की निन्दा सुन सकता है। कबीर साहिब का एक शब्द है।

सब ही मदमाते कोई न जाग।

वह कहते हैं सारे ही मदमाते हैं अर्थात अहंकार और अभिमान में हैं।

संग ही चोर घर भूसन लाग।
पण्डिन माते पढ़ पुरान,
योगी माते योग ध्यान।

वह कहते हैं योगी भी मदमाते हैं। जो पण्डित पुराण पढ़कर सुनाते हैं, ये भी मदमाते हैं।

तपसी माते मन के भेव।
सन्यासी माते कर अहंभेव,

यह सब खण्डन है या कि नहीं :-

मौलाना माते पढ़ मुसहाफ,
काजी माते दे इन्साफ।

काज़ियों, मौलवियों और हिन्दूओं का भी खण्डन है यह कबीर साहिब की बाणी है। इन बाणियों नें मुझे पागल किया हुआ था। मैं देखना चाहता था कि संतमत में सच्चाई क्या चीज़ है ? दाता से मेरा विश्वास नहीं टूटता था लेकिन मुझे बाणी पता नहीं देती थी। जब मैं दाता दयाल को तंग करता था कि मुझे वह असली भेद बताओ कि किस Authority के आधार पर उन्होंने सबका खण्डन किया तब उन्होंने 1918 में मुझे गुरु पदवी देकर कहा था कि तुझे इस भेद को समझाने वाला सच्चा सत्गुरु, सत्संगियों के रूप में मिलेगा। अब सत्संगियों की सेवा से वह भेद मुझे मिल गया। मैंने जो कुछ सीखा वह आप लोगों से सीखा। दया तो दाता दयाल या बाबा सावनसिंह जी की हैं मगर इस आयु में आप सत्संगी लोग मेरे सच्चे सत्गुरु है जिन्होंने मेरी बाकी कमाई पूरी की और मेरी आंख खोलकर सच्चाई बताई।

संसारी माते मायक धार,
राजा माते कर अहंकार।
माते सुकदेव उद्धव अक्रूर,
हनुमन्त माते धर लंगूर।

अब देखो, क्या कबीर साहिब ने किसी को छोड़ा है ? सबको कहा कि ये मदमाते हैं। क्यों मदमाते हैं ? क्योंकि वे अपने मन के विचार में बन्धे हुये थे। संतमत की असली शिक्षा आवागवन से बचने के लिए है। आवागवन से कौन बचना चाहता है ? ऐसी बाणियों ने ही मुझे जीवन में विवश किया कि सच्चाई की तलाश करूं कि सच्चाई क्या है। वह सच्चाई मुझे तुम लोगों से मिली। केवल इस एक विचार से, कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता और न ही मुझे पता होता है, मेरे जीवन का तख्ता बदल गया और मैंने शिक्षा को बदल दिया। मुझे काम करते हुये चालीस साल हो गये अगर मैं ग़लत होता तो कोई धर्म पंथ वाला तो मेरे विरुद्ध कहता कि मैं ग़लत हूं।

मनसा होगी तेरी पूरी, मन से करले गुरु का ध्यान।
मूल नाम गुरु नाम है, मूल रूप गुरु रूप।
मूल भजन गुरु शब्द का, गुरु निर्वाण के भूप॥

जब तक तुम गुरु को कोई आदमी समझते रहोगे तुम्हें निर्वाण नहीं मिल सकता। सब धोखा

खा रहें हैं। जो कुछ गुरु ने तुम्हें कहा है वह गुरु नाम है।

गुरु वाक्यं मूल मंत्रम्।

मैं सबको इसलिए नाम नहीं देता। इसके ग्राहक केवल साधू संत हैं, संसारी नाम के अधिकारी नहीं हैं। पहले इन्सान बनो। तुम्हारा विचार और चरित्र ठीक होना चाहिए तब तुम आगे जा सकते हो। इसलिए मैंने अपने आश्रम का नाम रूहानी आश्रम या राधास्वामी सत्संग नहीं रखा।

गुरु की प्रीत हिये में धार, मिलेगा तब सच्चा गुरु ज्ञान।

किस गुरु की प्रीत हिये में धारनी है? क्या फकीरचन्द की प्रीत? नहीं तुम भूले हुये हो। गुरु नाम ज्ञान, समझ और विवेक का है। जो कुछ गुरु ने तुम्हें बताया है अगर उसे चौवीस घण्टे हृदय में रखोगे तब निर्वाण प्राप्त होगी। फकीर चन्द को याद करने से तुम्हें निर्वाण नहीं मिलेगा। जो आदमी किसी गुरु का ध्यान करते हुये मरेंगे उन्हें मुक्ति नहीं मिल सकती अच्छी योनी मिलेगी। यह ठीक है। जैसी आशा वैसी वासा"।

तीरथ में है पत्थर पानी, ब्रत में कठिन कलेश।
बाद विवाद से मन हो कंचल, तत्व गुरु उपदेश॥
करे जो गुरु की संगत प्रानी, वह फिर पड़े न भव की खान।
गुरु विष्णु गुरु शिव की मूरत, गुरु को ब्रह्मा जान।
गुरु ब्रह्म गुरु पर ब्रह्म है, अपनी बुद्धि पिछान॥

जो गुरु को फकीरचन्द समझेगा वह कैसे तरेगा? हां! फकीरचन्द की बात को सुनो, समझो तब गुरु के रूप को जानोगे। इस वास्ते सबसे पहले बाहर का गुरु है शर्त यह है कि अगर कोई गुरु हो तो। मगर हमने तो अपने मंदिर बनाने के लिए गुरुआई की है, किसी ने डेरा बनाने के लिए गुरआई की है और किसी ने State या पंथ चलाने के लिए गुरुआई की। यह गुरुआई कहां की रही।

गुरु की भक्ति सब का सार है, और सब भरम अज्ञान।

गुरु की भक्ति क्या है? गुरु की बात को सुनकर, समझकर और उसपर अमल करना गुरु की भक्ति है।

दर्शन करे बचन पुनि सुने, सुन सुनकर नित मन में गुने।
गुन गुन काढ़ ले तिस सारा, काढ़ सार तिस करे अहारा।
कर आहार पुष्ट हुआ भाई, जग भव भय सब गई गंवाई।

जब निर्वाण मिलेगा तो गुरु के ज्ञान से मिलेगा।

भटक भटक कर भटका जग में, भटका बारम्बार।
जाके मन में अटक समाना, जय न भव के पार।
तू सोच समझ चित धार, बात यह सांची मन से मान।

यह दाता दयाल कह रहे हैं कि मैंने बहुत भटका खाया है, बहुत घूमा हूं। मैं जो कुछ कहता हूं वह गुरु की भक्ति है। गुरु की भक्ति क्या है। जो तुम इस समय कर रहे हो, यह गुरु भक्ति है। मैं जो कहता हूं उसे सुनो। अगर सच्ची लगे तो अमल करो झूठी लगे तो छोड़ दो। झगड़ा समाप्त हो गया।

राधास्वामी सतगुरु पूरे, धरा सन्त अवतार।
सुरत शब्द मत योग बताया, सार सार का सार।
बिन गुरु, भक्ति ज्ञान नहीं पावे, सब संतन ने किया वखान।

अब प्रश्न यह कि क्या सुरत शब्द के बिना आदमी को मोक्ष नहीं होती ? यह एक प्रश्न है जो मैं अपनी आत्मा से करना चाहता हूं। शायद होती होगी। मगर मैं क्यों कहता हूं कि नहीं होती। क्योंकि मानव का जो अपना आप है जब तक यह शरीर, मन, मन के विचार और प्रकाश अर्थात

आत्मा को नहीं भूलेगा, छोड़ेगा इससे ऊपर नहीं जायेगा निर्वाण को प्राप्त नहीं हो सकता। अगर मरते समय उसके सामाने कोई सरगुण या निर्गुण रूप या कोई और रूप आयेगा, उसे नीचे आना पड़ेगा। शब्द के सुनने से क्या होता है ? आदमी मन, शरीर, विचार और प्रकाश को भूल जाता है तब उसका बेड़ा पार होता है। मैं नहीं कहता, कोई किसी और ढंग से मन को भूल सकता हो। मैंने जो समझा है वह कहता हूं।

अगर मानव भगवान या गुरु से निष्काम प्रेम करे तो उसके सब काम होने चाहिएं। एक शक्ति है, उसे जिस रूप में भी चाहो मानकर, पूर्ण समझकर उसका ध्यान किया करो, शरणागत हुआ करो रक्षा होती रहेगी।

सब को राधास्वामी !

सत्संग परम संत परम दयाल
फकीर चन्द जी महाराज
मानवता मन्दिर होशियारपुर।

दिनांक 1-4-79

अमर फल विरला गुरुमुख खाये॥

अमरपुरी में डेरा डाले, अमृत पी पी कर तृपजाये।
जिये न मरे न जग में आये, आवागमन के फन्द कटाये।
करम करे और बने न कर्त्ता, अहंभाव चित में नहीं लाये।
बन्ध निर्बन्ध न मुक्त अमुक्ति, इसकी महिमा वरन न जाये।
हद बेहद दोनों से न्यारा, अगम अलख में बासा पाये।
बसे खिसे नहीं सगुन न निर्गुन, कोई कैसे कह समझाये।
रूप रंग रेखा नहीं उसमें, नाम अनाम का भेद मिटाये।
ऐसा गुरुमुख गुरु का प्यारा, बिन बानी नित गुरुगुन गाये।
राधास्वामी दया पात्र सोई सांचा, सांच झूठ का भरम नसाये।

राधास्वामी। तुम लोग शायद यह विचार करते हों कि जो मैंने यह सत्संग का सिलसिला जारी किया

है, इसमें मेरा कोई निजी स्वार्थ होगा ? यह बात बिल्कुल नहीं है। मैं बचपन से राम को मिलना चाहता था, जहां से मैं आया हूं। ये ऐसी ही बाणियें हैं जिन्होंने मुझे सारा जीवन पागल किया हुआ था। यह शब्द, जो पढ़ा गया, यह दाता दयाल महर्षि शिवव्रतलाल जी महाराज का है। इस संतमत में सत्गुरु की महिमा गाई है। वह कहते हैं, कि कोन है, जो इस चीज को प्राप्त कर सकता है? कोई गुरुमुख। गुरुमुख का अर्थ क्या हुआ ? क्या जो मानवता मंदिर या डेरा बना देता है? नहीं ! गुरु नाम ज्ञान और अनुभव का है। फकीरचन्द या कोई और गुरु, गुरु नहीं है। तो गुरुमुख कौन है ? जिसे अपने आप का ज्ञान है कि वह कौन है। मुझे क्या ज्ञान हुआ कि मैं कौन हूं ?

मैं अपने आपसे पूछता हूं, तू लोगों को उपदेश करता है, अपने आपको संत सत्गुरु भी कह देता है, पहले तू यह बता कि तुझे अमर फल मिल गया, तो तूने अमरफल पा लिया, तूने क्या समझा ? जो अमर फल मैंने समझा है पता नहीं वह ग़लत हो। दाता दयाल या कबीर साहिब का अमर फल वही

हो या कोई और हो, मुझे इसका पता नहीं। मगर मैंने अमरफल क्या पाया ? यह ज्ञान कि मैं कौन हूं यह अमरफल आप लोगों की दया से प्राप्त हुआ। पहली दया तो दाता दयाल की है। उन्होंने जब देखा कि यह मूर्ख है, इसकी समझ में बात नहीं आती तो उन्होंने 1918 में मुझे यह काम दिया था और कहा था कि तुमको सत्पुरुष राधास्वामी दयाल सत्संगियों के रूप मिलेंगे। जब से मैंने सत्संगियों से सुना कि मेरा रूप उनकी सहायता करता है और मुझे कोई पता नहीं होता तो मुझे ज्ञान हो गया कि जितने संकल्प और विचार मेरे अन्तर उठते हैं, जो कुछ मैं विचार करता हूं, सोचता हूं, झुरना फुरती है, रूप शक्लें दिखाई देती हैं जिस प्रकार राडार के के अन्तर दिखाई देती हैं, ये संस्कार हैं। ये सारे के सारे कल्पित हैं। मेरी कल्पना और माया है, तो मैं इनको छोड़ जाता हूं। आगे प्रकाश और शब्द है। प्रकाश को देखता और शब्द को सुनता हुआ, जब उस चीज़ की तलाश करता हूं जो चीज़ प्रकाश को देखती और शब्द को सुनती है, वह और है। वह

क्या है ? कोई वर्णन नहीं कर सकता केवल उसे महसूस कर सकता है । वह चीज़ अमर है ।

अमरापुर में डेरा डाले, अमृत पी पी कर तृप्ताये ।

अर्थात जिसको यह ज्ञान हो जाता है कि मैं कौन हूं, उसको शान्ति मिलती है । फिर अमर क्या चीज़ हुई ? एक तत्व है जिस को न कोई देख सका न किसी ने देखा, न कोई उसे जान सका न किसी ने जाना । इसवास्ते, उस मालिक का नाम संतों और गुरु नानक साहिब ने अकाल पुरुष रख दिया, कबीर साहिब ने अनामी पुरुष रख दिया, राधास्वामीमत वालों ने राधास्वामी या अनामी रख दिया और मुसलमानों ने लायला हा इलिला रख दिया । जब मैं यहां पहुंचा तो मुझे क्या पता चला । मैं कुछ बन गया ? नहीं । केवल मेरी तलाश का जो भ्रम था वह समाप्त हो गया । अब न कहीं जाता न आता हूं । स्वाभाविक काम करता हूं । जिस प्रकार हम स्वाभाविक टट्टी पैशाब जाते हैं । ऐसे ही जैसी किसी की प्रकृति बनी हुई है वह वैसा वैसा काम करने के लिए विवश है ।

जिये न मरे न जग में आये, आवागवन के फन्द कटाये।

यह "ज्ञान" कि मैं कौन हूं, इसके बिना जन्म मरण की फांसी नहीं कटती। जिसे ज्ञान हो जाता है फिर वह न जीता है और न मरता है। जीयेगा तो तब जब वह मन में आयेगा या शब्द को सुनेगा तब उसमें जीवन आयेगा। जब सबको छोड़ जायेगा तो वह न जीता है न मरता है। वह क्या है ? कुछ पता नहीं। वह कुछ है। क्या है ? उसके बारे में कुछ नहीं कह सकता।

करम करे और बने न कर्ता, अहंभाव चित में नहीं लाये।

अब मुझे यह समझ आ गई है कि जो कुछ हर एक आदमी से हो रहा है यह उसकी अपनी प्रकृति है। जैसी प्रकृति जिसके मस्तिष्क की बनी हुई है, वह वैसा काम करेगा। जब उसे यह ज्ञान हो जाता है तो वह अपनी प्रकृति अनुसार काम करने के लिए विवश है। उसके वस की कोई बात नहीं। मगर क्योंकि उसे ज्ञान हुआ है, वह समझता है कि यह प्रकृति का खेल है, मैं तो कुछ नहीं करता। करना कराना तो क्या, मैं समझता हूं कि मैं तो कुछ हूं

ही नहीं। अगर मैं वहां पहुंच कुछ कर बन गया हूं या मैं न सही, दूसरे महात्मा कुछ बन गये हों तो वे ही कुछ कर सकते। मैं कैसे मानूं। जब ये बड़े २ महात्मा बीमार रह कर मर गये तो कर्म करता हुआ अकर्मक कैसे होगा ? यह जान कर आप अपने यत्न से नहीं बनोगे जब तक यह ज्ञान नहीं है कि संसार क्या है, और मैं क्या हूं तब तक कर्म करता हुआ अकर्मक बनना अमली जीवन में नहीं आ सकता।

वन्ध निर्बन्ध न मुक्त अमुक्ति, इसकी महिमा बरन न जाये।

मैं इसको समझता हूं मगर शब्द नहीं मिलते जो इसे वर्णन करूं। वह समझ सकता है जिसको इस लाईन का खबत है। उसकी क्या अवस्था हो जाती है ? वह बन्धन में बंधा हुआ है, मगर वह उस बन्धन को बन्धन नहीं समझता। क्यों नहीं समझता ? मैं दूसरों के बारे नहीं जानता। मुझे यह पता लग गया कि मैं इस शरीर के अन्तर एक ऐसी चीज़ बनी हूं जो सब चीज़ों को देखती है और साक्षी है। मगर मैं अपने आप कौन हूं, इसका मुझे पता नहीं। कुछ हूं। जो कुछ हूं वह मैंने क्या समझा कि मैं कौन

हूं ? मैं एक चेतन का बुलबुला हूं। प्रकृति ने बनाया है और यह प्रकृति का काम है। इसवास्ते जिसको बन्धन में यह ज्ञान हो जाता, वह बन्धन में निर्बन्ध रहता है, दुख और सुख नहीं मानता। इसका यह भाव है, जो मैंने समझा है। शायद दाता दयाल का कोई और भाव हो, मुझे पता नहीं। इस संसार के अन्तर माया अर्थात विचार शक्ति काम करती है। वासना, इच्छा यही माया है अगर ज्ञान हो जाये तो सब कुछ होता हुआ भी उसे चिन्ता नहीं व्यापती। इस बात के अतिरिक्त मैंने राधास्वामीमत से और कोई चीज़ नहीं पाई। सन्तमत क्या है ? इस जीवन में खुशी और चिन्ता रहित, निर्भय और निर्वैर होकर रहना, मैंने संतमत को यह समझा है।

हद वेहद दोनों से न्यारा, अगम अलख में वासा पाये।

वह दोनों से न्यारा कैसे हुआ ? केवल समझ और विवेक के साथ न्यारा हुआ। शरीर, मन, प्रकाश और न संसार में फंसता है, इसका भाव हद बेहद से न्यारा है। बेहद वह है जहां अपनी Existance ही नहीं रहती। दूसरा आदमी तो केवल

बुद्धि से समझ सकता है। संसार संतमत का अधिकारी नहीं है। क्योंकि सर्व साधारण लोग तो कल्पना पसन्द करते हैं। इसलिए मैं सन्तमत की शिक्षा आम नहीं देता केवल मानवता की शिक्षा देता हूं जिससे तुम्हारा यह जीवन किसी प्रकार से अच्छा व्यतीत हो जाये। सन्तों का मार्ग बिल्कुल ऊंचा है। संत वह हो सकता है जो स्थूल, शूक्ष्म और कारण प्रकृति से अलग हो। मैं स्वयं अभी तक 100% संत नहीं बन सका। समय समय पर मेरे ऊपर सन्तगति तारी होती है। दाता दयाल का शब्द है।

सन्त मत मारग झीना है, हां॥

त्याग स्थूल सूक्ष्म गति निरखे, फिर कारन की वारी।
कारन तज महा कारन धावे, तब समझो अधिकारी।
धरम करम व्यौहार न छोड़े, ढूंडे सार न इनमें।
सुरत शब्द में सार छुपा है, करे प्राप्त सो तिन में।

वह कहते हैं, काम करो, संसार में फंसो नहीं। अगर आप अपने आपको जानना या अमरफल पद की असलियत को चाहते हैं तो जब तक तुम मन से परे नहीं जाओगे और प्रकाश और शब्द में रहकर उस

की तलाश नहीं करोगे जिसमें से प्रकाश और शब्द निकला है तुम सन्त नहीं हो।

संजम नियम जप तप कर्मा, नहीं किंचित कठिनाई।
सहज योग की सहज रीति है, सहज ही सहज भलाई।

मेरे लिए सहज तो अपने आप ही हो गया। पहले रूप प्रकट होते थे। उनके पीछे दौड़ता था। अब इस ज्ञान से कि यह तो सब मन की कल्पना और माया है, मेरे लिए सारा खेल आसान हो गया क्योंकि उसमें मैं फंसता नहीं। मगर संसारी संसार के लिए अभ्यास करते हैं, कोई धन, कोई पुत्र के लिए अभ्यास करते हैं। इसलिए कर्म करते हैं और समाधियें लगाते हैं कि हमें यह मिल जाये और वह मिल जाये। इसवास्ते सन्तों का मार्ग कुछ और है। जब तक पहले मानव इस संसार में सुखी नहीं है, वह संत बनकर क्या करेगा ? या इतना उत्साह हो कि संसार की विपत्तियों की परवाह न करे।

कोई मरे कोई जिये, सुथरा घोल बताशा पीये।

जब तक ऐसा नहीं है कोई आदमी भी सन्तगति को प्राप्त नहीं कर सकता। अगर मैं केबल इसीलिए

यह काम करता हूं कि मेरा मंदिर बन जाये, मेरा नाम रोशन हो जाये, मैं संसार में माना जाऊं तो मैं भी दोषी हूं।

सत्गुरु सत नाम सत संगत, समझ सहज में धारे।

वह कहते हैं कि सत्गुरु की संगत से सन्तमत की समझ आती है। आजकल कौन संत है जो यह शिक्षा देता है। मगर मैं संतों को भी क्या कहूं। कौन आदमी है जो इस शिक्षा के लिए सन्तों के पास जाता है। उनके पास तो संसारी जाते हैं जो संसार चाहते हैं।

फिर अन्तर में करे चढ़ाई, जड़ चैतन निवारे।

हमारे अन्तर जो मादी चीज़, शक्लें रंग, रूप पैदा होते हैं, इसका निर्णय करे कि ये क्या हैं ? जो देखने वाला है, वह चेतन है, ये सब चीज़ें जड़ हैं।

राधास्वामी ने भेद, बताया सुरत शब्द मत गाया।

राधास्वामी दयाल गुरु ने हमें भेद दिया। बाहर के गुरु की महिमा तो केवल यह है कि वह भेद, मरम बताता है। मगर संसार ने यह समझा हुआ है

कि गुरु, पुत्र, धन धान्य देता है। वह तुम्हारे अपने कर्म और विश्वास से मिलता है। किसी गुरु में शक्ति नहीं। ऐ गृहस्थियो ! तुम लोग भूल में हो, तुम अपने अज्ञान में आकर इन गुरुओं के आगे लुट गये हो इन गुरुओं ने धोखे में रखने के अतिरिक्त और कुछ नहीं किया।

सुरत शब्द मत सब का टीका, सुरत में शब्द को पाया।

अब मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं, सुरत शब्द में क्या महानता है ? अकेला शब्द योग ही हो, अगर गुरु पूरा नहीं है तो वह शब्द भी उसको खा जायेगा। सन्तमत में तीन चीज़ें हैं। पूरा गुरु, उसका बचन और शब्द। लाखों आदमी शब्द अभ्यास करते हैं, क्या बन गया ? मैंने भी बहुत किया है। क्या मैं बीमार नहीं होता ? होता हूं। सुरत शब्द योग तो केवल उस तलाश को मिटाने का उपाय है कि मैं कौन हूं, मेरा मालिक कहां है, मैं कहां से आया हूं और संसार क्या है ? शब्द योग केवल इस बात का निर्णय करने में सहायता करता है और पूरे गुरु की बाणी को समझने के योग्य हो जाता है वरना मैंने शब्द योग वाले बहुत दुखी देखे। मैंने इन शब्द

योग करने वाले गुरुओं का पिछला जीवन देखा है। ये बहुत बुरी तरह से मरे हैं कोई दस दिन बेहोश रहा तो कोई बीस दिन बेहोश रहा।

बसे खिसे नहीं सगुन न निर्गुन, कोई कैसे कह समझाये।

वह कहते हैं उसके बारे क्या कहा जाये। न वह निर्गुन है न वह सरगुन है। यह अमल का विषय है। जो साधनकरता हैं उसे पता लगता है।

रूप रंग रेखा नहीं उसमें, नाम अनाम का भेद मिटाये।

नाम अनाम का भेद कैसे मिटा ? मुझे पता नहीं दाता दयाल का इस शब्द से क्या भाव है। मैंने नाम और अनाम का भेद मिटा लिया। कैसे मिटाया ? मेरे अन्तर प्रकाश और शब्द को जो चीज़ देखती है उसको ढूंडता हूं। उसका पता नहीं लगता। गुम हो जाता हूं। तो जब मैं गुम हो जाता हूं तो मैं ही नहीं रहा, नाम और अनाम समाप्त हो गये। अब ऐसा समझता हूं। दाता दयाल या संतों का क्या भाव है, यह वे जानते होंगे, मुझे पता नहीं मेरे साथ जो बीती मैं वह कहता हूं।

ऐसा गुरु मुख गुरु का प्यारा, बिन बानी नित गुरु गुन गये।

आप बतायें, बिना बाणी, बिना बोले, विना विचारे उसके कौन गुण गायेगा ? वह अनुभव जो मानव को होता है कि मैं कौन हूं, और संसार क्या है । उसका Realization जो उसके मस्तिष्क में होता है, वह गुरु के गुण गाना है । जय बाबा फकीर, जय राधास्वामी या जय कोई और गुरु कहने से, यह गुरु का गुण गाना नहीं है । गुरु नाम ज्ञान का है । सृष्टि क्या है, कैसे बनती है और कैसे समाप्त होती है । जो इसका ज्ञान रखता है वह गुरु का गुन गाता है बिना ज़बान के गाता है अनुभव अर्थात अपने मस्तिष्क से ।

राधास्वामी दया पात्र सोई सांचा, सांच झूठ का भरम नसाये ।

आपलोग आ जाते हैं । आपलोग संसारी हैं । आप-को अमरपद की आवश्यकता नहीं है । जो कुछ किसी को मिलता है वह उसका किसी जगह अपना विश्वास काम करता है । एक के सहारे हो जाओ, तुम्हारा संसार बन जायेगा । जो आज राम, कल कृष्ण, दो दिन बाद बाबा फकीर, फिर किसी और को पूजता है, वह धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का अर्थात

किसी ओर का नहीं रहता। सब एक ही चीज़ है और वह तुम्हारा अपना ही मन है। अपना आप ही सच्चा गुरु और सच्चा चेला है। अगर तुम सच्चे हो और सच्चाई के अनुयाई हो और अपने अनुभव से लाभ उठाने वाले हो तब तो तुम गुरु मुख हो और अगर तुम अनुभव से लाभ नहीं उठाते जो तुम्हारे साथ बीतती है, उससे लाभ नहीं उठाते, आगे नहीं चलते, तुम गुरु मुख नहीं हो सकते चाहे तुम गुरु को करोड़ों रुपये दे दो, उसके मंदिर शहर बना दो, उसके नाम का ढंढोरा पिटा दो, जन्म दिन मना लो। गुरु नाम समझ और ज्ञान का है। जो अपनी समझ और सत्संग के बचनों से लाभ उठाता है, उसका नाम गुरु मुख है दौलत देने वाला गुरु मुख नहीं बन सकता। धन दोगे धन मिलेगा, प्यार दोगे प्यार मिलेगा, गाली दोगे गाली मिलेगी और प्रेम दोगे तो प्रेम मिलेगा। यह तो मैं जानता हूं मगर गुरु-मुख नहीं बन सकते। गुरुमुख तो वह बन सकता है, गुरु नाम समझ, विवेक का है, जो समझ बूझ और विवेक के साथ अपना जीवन व्यतीत करता है और ज्यों-ज्यों उसका विवेक बढ़ता जाता है, वह भी बदलता जाता

है । मेरे बीस पच्चीस साल पहले के सत्संग कुछ और थे, दस साल के कुछ और थे। अब बिल्कुल ही बदल गये, क्योंकि मेरा अनुभव बढ़ गया । मैंने अपने अनुभव से लाभ उठाया है। मैंने किताबों के हवाले नहीं दिये ।

ऐ मानव ! जो कुछ करता है तेरा अपना विश्वास, विचार और संकल्प है । गुरु ने केवल तेरे विश्वास को बन्धा देना है और अच्छा विचार देना है ताकि तुम ग़लत विचार न ले लो । मैं, इसके अतिरिक्त गुरुमत की और कोई हकीकत नहीं समझता । अगर सन्त कुछ कर सकता है तो वह शुभ भावना दे सकता है । अगर तुम्हारा विश्वास है तो तुम्हारा विश्वास करता है, शुभ भावना काम नहीं करती । शुभ भावना उस पर काम करती है जो विश्वासी आदमी है दूसरे पर नहीं कर सकती । सन्तमत क्या है ? इस जीवन में खुशी, बेफकरी चिन्ता-रहित जीवन व्यतीत करना और निर्भय, निर्वैर होकर रहना, मैंने सन्तमत को यह समझा है । मुझे विश्वास हो गया कि मैं चेतन का एक बुलबुला हूं । बनाने वाले ने बनाया । जो काम लेना है, लेकर बुलबुला

टूटेगा। हस्ती को मिटा जाऊंगा। न पहले था न फिर रहूंगा। एक तत्व है वह रह जायेगा। यह सारा खेल उस प्रभु का है। हमने ही किसी काम को बुरा समझा हुआ है और किसी को अच्छा समझा हुआ है। भ्रम, अज्ञान चला गया। भगवान की तलाश समाप्त हो गई। शान्ति है, मुझे यह मिला। फकीरी की अन्तिम अवस्था ज़ात में गुम हो जाना है। दाता दयाल का एक शब्द है।

न अपना नाम रखना तुम, न दुनियां में निशां रखना।
नहीं की जब गई आदत, ज़वां पर तब न हां रखना।
मुकर होना अबस है, और मुनकर होना है ग़लती।
न सिर में ऐसे सौदा का, कभी बारेगिरा रखना।
न साहिबे दिल न बेदिल, बनने की तुममें हविस आये।
न दिल देना न दिल लेना, न बहरे दिलस्तां रखना।
अगर है तर्क तर्क करदो, तर्क का भी तर्क बेगुमां।
मकां जब छुट गया फिर, क्यों खयाले लामकां रखना।
खामोशी मनाये दारद, कि दर गुफतन नमी आयद।
न सच और झूठ कहने, के लिए मुंह में जुवां रखना।

आप संसारी हैं। आपको इस लाइन के खवत की आवश्यकता नहीं है। तुम माया देश में रहते

हो। विचार माया का खेल है। अपनी नीयत और अपने विचार को भी ठीक रखो। जैसी तुम्हारी नीयत वैसा तुम्हारा फल। तुम्हारे सांसारिक जीवन में तुम्हारा विचार काम करता है। जैसा तुम्हारा ख्याल होगा वैसा तुम्हरा हाल होगा। जिस समय मैं, शरीर या मन में आता हूं, सोचता हूं कि क्या मैं किसी का कुछ कर सकता हूं ? यह एक प्रश्न है, जो मैं अपनी आत्मा से करता हूं। मुझे विश्वास हो गया है कि जो कुछ है, इन्सान का विचार है। मगर यह वहां प्रभाव करता है जहां दूसरे का विश्वास होता है। तुम अपनी अपनी जगह, जहां २ तुम्हारा विश्वास है, विश्वास रखो। अच्छा विचार मांगा करो, तुम्हें मिल जायेगा और तुम्हारा संसार बन जायेगा।

सब को राधास्वामी !

पत्र व्यवहार द्वारा ज्ञान

प्यारे भाई, राधास्वामी !

प्र०- मुक्ति के लिये क्या राम राम का जाप ही काफी है या गुरु का दिया हुआ नाम ?

उ०- मेरा जवाब यह है कि न तो गुरु का नाम दिया हुआ मुक्ति दे सकता है और न राम का नाम मुक्ति दे सकता है। यह जाप जो है यह केवल मन को एकाग्र करने के लिये है, ध्यान जो है, मन के ख्यालात को छोड़ने के लिये है। शब्द अभ्यास जो है यह सुरत को स्थिर करने के लिये है, जब यह स्थिर हो जाये तब इन्सान को जो असल में वो है जो सुमिरन, ध्यान और शब्द का साक्षी है, उसका ज्ञान होता है। वह जो ज्ञान होता है वह आदमी को निश्चय करा देता है कि जो चीज़ अन्तर में सुमिरन और ध्यान करती थी या शब्द सुनती थी वह और है और जो कुछ वह करता था या नज़र आता

है (शब्द हो या प्रकाश हो) वह और है। इसलिये अभ्यास और सुमिरन ध्यान से जब मन निश्चय हो जाये तब किसी को गुरु धारन करना चाहिए, यद्यपि कोई गुरु हो, जो स्वयं मुक्त अवस्था में रहता हो तब वह अपने बच्चों से हित के सदृश आदमी को अपने रूप का ज्ञान देकर वह जो राम, ईश्वर, गुरु, चेला, भक्ति या अन्य काम करता था, उससे, उसको निर्बन्ध कर सकता है। किसी के बन्धन में न आना ही मुक्ति है। जो इन्सान राम राम या ईश्वर ईश्वर करते रहते हैं या उससे प्रेम करते हैं या गुरु गुरु करते रहते हैं या गुरु से प्रेम करते हैं वह भी बन्धन में हैं।

तुमने सुना सुनाया स्वाल कर दिया मुक्ति का अर्थ तुम को पता नहीं, अपने आपे (Self) का किसी चीज़ के साथ बन्धन हो जाना, बंध जाना, बन्धन है और उसके बंध में न आना मुक्ति है, कबीर साहिब ने कहा है :-

जीबत भरम की फांसी न काटी, मुए मुक्ति की आसा हो।

आदि आदि, आपने लिखा है 'आत्मा' आत्मा को देखा भी है कि आत्मा किसे कहते हैं या नाम ही सुना हुआ है ? आत्मा ही जन्म लेता है और मरता है, तो आत्मा में रहने वाला मुक्ति को कैसे प्राप्त करेगा। आत्मा संस्कृत का शब्द है, इत और मनन, इत का अर्थ है हरकत, मनन का अर्थ है सोचना। आत्मा से परे परमात्मा भी है और परमात्मा से परे सत भी है और अलख भी है, अगम भी है और अनामी और ज़ात भी है, मैंने जो समझा वह आप को लिख दिया, मेरा दावा कोई नहीं, यह मेरा तिरानवे साल की ज़िन्दगी का तजुर्बा है। पहले करनी करो, अभ्यास करो, रूप बनाओ शब्द सुनो, फिर किसी कामल पुरुष के सत्संग की तलाश करना, असली और सच्चा गुरु सदा उस को जिसकी निर्विकल्प समाधि लग जाती है, उसके बाद मिला करता है, अगर पहले मिल जाये तो भी कोई लाभ नहीं। मन को रोकने के लिये कोई किताब नहीं, जब तक किताब पढ़ते रहोगे, मन रुकेगा कैसे ? मन कभी किसी का रुका नहीं, केवल वह रोक सकता है जिस

को मन के रूप का पता है कि मन चीज़ क्या है, इस का कोई रूप आकार तो है नहीं ऐसे स्वाल अगर खतों में हल हो जाते तो सत्संग का लफज़ दुनियाँ में न घढ़ा जाता।

फ़क़ीर !

आवश्यकता है ।

ऐस बारह रिटायर्ड सत्संगी भाईयों का जो अपना स्वार्थ और परमार्थ दोनों ही परम संत पूरन-धनी हज़ूर दाता दयाल महर्षि शिव ब्रत लाल वर्मन की पावन समाधि पर रह कर बनाना चाहते हैं। समाधि के चारों ओर दाता दयाल के पवित्र हाथों के लगाये हुये फल और फूलों से लदे हुये पेड़ों के कुँज हैं और उन्हीं के कर कमलों द्वारा निर्माणित कुँआ भी है जिसका पानी अमृत तुल्य है। आस पास के लोग इस पावन जल को औषधि के रूप में प्रयोग करते हैं। जो भाई इस पवित्र तीर्थ स्थान पर रह कर अभ्यास और सत्संग द्वारा इसी जन्म में जीवन-मुक्त अवस्था प्राप्त करना चाहते हैं वो आज ही अपना नाम और पता निम्नलिखित पते पर एक रुपये के मनी आर्डर के साथ प्रार्थना पत्र भेज दें।

सत्संगी भोइयों के रहने खाने पीने, चाय नाश्ता, बिजली पानी और फरनीचर का कुल प्रबंध "राधा-

स्वामी जनरल सत्संग ट्रस्ट'' (रजिस्टर्ड) द्वारा होगा और उन्हें केवल एक सौ एक रुपये प्रति मास अग्रिम जमा करना होगा ।

पता :-

भाई पारसनाथ सेक्रेटरी, राधास्वामी जनरल सतसंग ट्रस्ट शिव समाधि, पोस्ट राधास्वामी धाम, जिला वाराणसी (उत्तर प्रदेश)

राधास्वामी,

"गुरु शिष्य वो आदेश"

लेखक :—(कुवेर नाथ श्री वास्तव एडवोकेट)

हम दूर की बात कर रहे हैं। इसको एकाग्रचित होकर सुनो और सुनने के बाद गुनो। यदि सुनकर गुनने में कुशल हो गए तो निश्चय ही लक्ष्य को प्राप्त कर लोगे।

धूप कड़ी है। जो ठन्डक चाहता है। आगे वाटिका की सैर करनी चाहिए। वहां गुलाब के फूल खिले हुये हैं। सुगन्ध निकल रही है। वायु मण्डल सुगन्धित है। उसकी सुगन्ध से तुम आकर्षित होकर शान्त व प्रफुल्लित होंगे। गुलाब का फूल गुरु है तुम शिष्य हो। उसकी सुगन्ध से शान्त व प्रफुल्लित होना तुम्हारा लक्ष्य है। गुलाब का फूल तुम्हारे प्रेम सहानुभूति एकाग्रता का आश्रय नहीं है। वो तो स्वयं पूर्ण है। मगर उससे लाभ उठाने हेतु तुमको उससे प्रेम सहानुभूति व एकाग्रता का होना आवश्यक

है जब तक तुम में यह गुण नहीं हैं, तब तक तुम उसकी सुगन्ध लेने और शान्तमय होने में असमर्थ रहोगे।

आगे **बढ़ें,** मोर नाच रहा है। मोर का नाचना प्राकृतिक गुण है। जैसे गुलाब के फूल से सुगन्ध निकलना प्राकृतिक गुण है। वह तुमको प्रसन्न करने हेतु ऐसा नहीं कर रहा है। वह स्वभावतः नाच रहा है। तुम उसको देख कर प्रसन्न होंगे। क्यों ? तुमको उसके नाच से प्रेम हो गया है। और स्वभावतः तुम उसके नाच से सहानुभूति व कृतज्ञ हो गए। अगर ऐसा नहीं करते तो उसके नाच से प्रसन्नता प्राप्त करना जो तुम्हारा लक्ष्य है, असम्भव है। तुम्हारे साथ एक नेत्र हीन आदमी है। क्या उसको वह प्रसन्नता प्राप्त हो रही है जो तुमको प्रसन्नता प्राप्त हो रही है ? नहीं ! ऐसा क्यों ? क्योंकि वह मोर के नाच को नहीं देख सकता और उसके नाच के गुण को ग्रहण करने की शक्ति नहीं है। वहां मोर गुरु है। तुम शिष्य हो, और प्रसन्नता तुम्हारा लक्ष्य है।

आगे बढ़ें। वो बादल उमड़ आया। रिमझिम पानी बरसने लगा। पानी तो बंजड़ एवं उपजाऊ दोनों भूमियों में बरस रहा है। लेकिन उपजाऊ भूमि में जो पौधे हैं वे लहरा उठे और ऊसर ज्यों की त्यों पड़ी हुई है।

सन्त तुलसी दास जी ने कहा है।

सुधा वृष्टि हुई दो दल माहि।
गये भालू कपि निश्चय नाहि।

गुरु से लक्ष्य को वही लोग प्राप्त कर सकते हैं जो गुरु के संस्कार को ग्रहण करने का अधिकारी हैं। गुरु आदर्श नहीं है वह आदर्श प्राप्त करने का अस्त्र है।

संसार त्रिगुणात्मक है। यहां तीन बातों का होना अवश्य है। जो कि शिक्षा, शिष्य व शिक्षक के रूप में है। तब कोई बात बनती है। पहले तुम्हारे मन में किसी वस्तु के प्राप्त करने की वासना उठती है। तुम उसकी प्राप्ति के फेर में पड़े, तुम शिष्य हो गये। उसकी प्राप्ती के लिये अस्त्र ढूंडने लगे। तुम में उसकी प्राप्ति के अधिकार और संस्कार प्रबल हो गये।

प्राकृतिक निमानुसार तुमको ऐसा व्यक्ति मिल गया जो तुम्हारे लक्ष्य की प्राप्ति की युक्ति बता दे। वह गुरु है।

जो सम्बन्ध शिक्षा, शिक्षक और शिष्य में है वही सम्बन्ध आदर्श शिष्य और गुरु में है। शिक्षा का सम्बन्ध सांसारिक दृष्टि कोण से है। गुरु शिष्य को आदर्श की प्राप्ति नहीं करा सकता। आदर्श की प्राप्ति में जो कठिनाई व परिश्रम करनी पड़ेगी वो तो शिष्य के सिर पर है। गुरु केवल आदर्श की प्राप्ति की युक्ति बताने ब शिष्य के अधिकार अनुसार उसकी देख भाल करने का उत्तरदायी है। अगर शिष्य ने गुरु की सहानुभूति से लक्ष्य को प्राप्त कर लिया तो जितनी प्रसन्नता शिष्य को लक्ष्य के प्राप्त करने में होती है उससे हज़ार गुणा प्रसन्नता गुरु को शिष्य के लक्ष्य को प्राप्त करने में होती है। ऐसा क्यों ? क्योंकि गुरु इस कारण से प्रसन्न होता है कि उसकी युक्ति कुशल हो गई और उसका परिश्रम सफल हो गया।

इसको इस प्रकार समझो। हम मूर्ति बनाना चाहते हैं। यह हमारा आदर्श है। इसके वास्ते पहले

मोम-गिल्ली मिट्टी या पिघली धातु का कुशल पूर्वक होना आवश्यक है। यह अधिकार व संस्कार है। मूर्ति ढालने के लिए हमको सांचा बनाना पड़ेगा। हम किसी ऐसी वस्तु यानि लकड़ी या धातु को प्राप्त करते हैं और उस पर पूर्ण विश्वास रखते हैं कि यह वस्तु इतनी मजबूत है कि यह सांचा बनाने पर टूट फूट नहीं सकती और सांचा कुशल पूर्वक बन जाएगा। सांचा बनाने में तुम को कठिनाई पड़ती है। बड़े परिश्रम सतर्कता व कठिनाई से सांचा बनाना पड़ता है। क्योंकि सांचा बनाने में अगर चूक रह गई तो जो मूर्ति उसमें ढाली जाएगी उसमें त्रुटी रह जायेगी और आदर्श की प्रप्ति ज्यों की त्यों नहीं होगी। अतः सांचा बनाने के लिए तुममें पूर्ण रूप से अधिकार होना आवश्यक है। तुमने सांचे को पूर्ण रूप से बना लिया। अब तुमको सांचे के सच्चा होने में पूर्ण विश्बास हो गया। अब तुमने गुरु प्राप्त कर लिया। जितनी मूर्ति चाहो बनाया करो। लेकिन सांचे को साफ व सुरक्षित रखो। यह गुरु का आदर सत्कार है। अगर ऐसा नहीं करते तो सांचा गन्दा हो जाएगा और मूर्ति त्रुटी पूर्ण निकल जाएगी। गुरु

सांचा है। मूर्ति नहीं। वह आदर्श या मूर्ति प्राप्त करने का अस्त्र है।

तुमने दिल्ली पहुंचने के लिए प्रस्थान किया। सड़क पर जा रहे हो। चलते २ तुम वहाँ पहूंचे जहां वह सड़क कई सड़कों से मिली हुई है। तुमको अब पता नहीं चलता कि दिल्ली जाने के लिए कौन सी सड़क पकड़ें। तुम्हारी दृष्टि सड़क के किनारे लगे हुए खम्भे पर गई जिसमें तख्ते पर लिखा हुआ है :- दिल्ली, कानपुर, लखनऊ आदि। जो तख्ता दिल्ली जाने वाली सड़क को संकेत कर रहा है उस सड़क पर तुम चल पड़े और दिल्ली पहुंच गये। तुम्हारा आदर्श खम्भा व तख्ता नहीं था। ये सब तुम को दिल्ली पहुंचाने के अस्त्र थे। इसलिए तुम्हें खम्भे वाले तख्ते का जीवन काल कृतज्ञ: रहना आवश्यक है। वह तुम्हारा दिल्ली पहुंचाने वाला गुरु है। स्वभावत: तुमको सदैव खम्भे वाले तख्ते की याद बनी रहेगी।

तुम्हारे कपड़े गन्दे हो गये हैं। तुम कपड़ों को साफ करना चाहते हो। कपड़ों को साफ करना तुम्हारा आदर्श है। तुम इस अवस्था में शिष्य हो।

उनको धोबी के वहां ले गये। धोबी ने साफ कर दिये। वह गुरु है।

तुम प्यासे हो। तुम को पानी चाहिए। गिलास उठाया उस में पानी भरा और प्यास बुझा लो। आदर्श शिष्य व गुरु का सम्बन्ध यही है। यदि इस संकेत को समझने में तुम सफल हो गये तो तुम स्वयं संकते हो कि गुरु उपरोक्त वार्ता के अतिरिक्त कुछ और है। गो कहने सुनने की बात नहीं है। बल्कि कहने से बाहर है। जिसकी महिमा लिखने ब कहने से बाहर है। कहने के वास्ते उसको सतगुरु कहते हैं।

मेरी करबद्ध प्रार्थना

भारत वासियो ! बचपन से किसी चीज़ की तलाश थी, जिस को मैं मालिक या राम समझता था, एक दृश्य द्वारा सन् १९०५ ईसवी में हुज़ूर दाता दयाल महर्षि शिव ब्रत लाल जी महाराज के चरणों में ले गई। उन्होंने सन्तमत दिया। इस सन्तमत के समझने में या जिस चीज़ की तलाश थी उसको पाने में तिरानवें साल का हो गया। अब वह चीज़ क्या निकली ? वह एक अवस्था है जहां मैं अपनी हस्ती को, हैपने को भूल जाता हूं जो। कुछ बाकी रह जाता है उस को ब्यान करने के लिये शब्द नहीं मिलते। बस यह मिला मुझे।

क्योंकि हज़ूर दाता दयाल जी महाराज ने मेरे जिम्मे निबल, अबल, अज्ञानी जीवों की सहायता, जगत कल्याण और साथ ही जीवों को भव सागर से पार करने का काम लगाया था जिसे आज उनतालीस साल से करता हुआ चला आ रहा हूं, मैं ने जो काम किया यह मेरे निज अनुभव के आधार पर है अथवा आप बीती को सामने रखते हुए किया।

गुरु आज्ञा का पालन करने के सिलसिले में मैंने मानवता मन्दिर की नींव रखी। जो कुछ मैंने कहा वह पुस्तकों अथवा मानव मन्दिर पत्रिका के रूप में आज कल प्रकाशित होता है। ब्राह्मण होने के नाते जो प्रकाशन मन्दिर से होता है उस का मूल्य नहीं रखा क्योंकि ब्राह्मण के लिये वेद बेचना पाप है, वेद नाम है ज्ञान का। पुस्तकें बड़ी होती हैं और दिन प्रति दिन मांग बड़ रही हैं। इस लिये मैं हाथ बांध कर कहूंगा कि जिन सज्जनों को मेरे अनुभव से सहमति न हो यूंहि किताबें मंगवाकर, क्योंकि ये मुपत मिलती हैं, मंन्दिर की हानी न करें।

अब किताबें अंग्रेजी और पंजाबी भाषा में भी मिलती हैं जो कि निम्न लिखित हैं।

ਪੰਜਾਬੀ ਕਤਾਬਾਂ ਦੀ ਸੁਚੀ

1. ਪੰਜ ਨਾਮ ਦੀ ਵਿਗਿਆਨਕ ਵਿਆਖਿਆ, 2. ਅਨੁਭਵ ਦਾ ਨਿਚੋੜ ਮਾਨਵਤਾ। 3. ਸਚਾਈ ਦਾ ਨਿਚੜ। 4. ਮਾਨਵਤਾ। 5. ਮਾਨਵ ਕਲਿਆਨ। 6. ਸੱਚਾ ਧਰਮ ਮਾਨਵਤਾ।

अंग्रेज़ी भाषा में साहित्य

1. A Word to Americans
2. A Word to Canadians
3. Manavta the true religion
4. Religious Research
5. Weight of Soul
6. Truth Always Wins
7. Essence of Truth
8. Science of God Realization
9. True Sanatan Dharama or True Religion of Humanity
10. Jeewan Mukti
11. Art of happy living

जिन को ज़रूरत हो वह मंगवा सकते हैं हम बिना मूल्य भेज देंगे। मगर यह मुफ्त का काम कब तक चलेगा ? इस लिये जो सज्जन यह समझते हैं कि जो कुछ मैं ने इन किताबों में लिखा है इस में कुछ सच्चाई है, इस पर आचरण करने से इन्सान का पारिवारिक, सामाजिक और आत्मिक जीवन सुधर कर निर्वाण को प्राप्त हो सकता है तो यथा शक्ति मन्दिर की सहायता करें ताकि यह सब काम जारी रखा जा सके।

सरकार के आयकर के नियमानुसार ट्रस्ट वालों को साल में जितनी आय अथवा दान आता है वह उसी

साल में खर्च करना पड़ता है इसलिये मैंने जनता, विशेष कर गरीब रोगियों के इलाज में सहायता करने के लिये तीन हस्पताल एलोपैथिक, डेन्टल व होमियोपैथिक खोले हुए हैं मगर मुसीबत यह है कि बजाय गरीबों के अमीर आदमी अधिकतर इलाज कराने के लिए आते हैं। इसलिये अगर कोई सज्जन इस काम में सहायता करना चाहता है तो करे मगर यह विनती अवश्य करूंगा कि जो धनी लोग हैं वह यहां हस्पताल से मुफ्त दवाई न लें।

भारत वासियो ! मैंने जो कुछ किया निज स्वार्थ या संतमत के पक्ष में इसे सच्चा सिद्ध करने के लिये नहीं किया। मालिक के मिलने की तलाश थी जिस को हम ईश्वर परमेश्वर समझते थे। मेरा भाग्य अथवा दुर्भाग्य इस संतमत या राधास्वामीमत में ले आया। यहां इन संतों ने तमाम धर्मों, वेदान्त या सूफीमत तक का भी खण्डन किया हुआ है। आत्मा खण्डन सहन नहीं कर सकती थी इसलिये प्रण किया था अपना अनुभव कह जाऊंगा। दाता दयाल जी महाराज ने काम दिया था। तुम ही सोचो राधास्वामीमत वालों की किताबों में संतों की इतनी

बड़ाई लिखी हुई है कि वह ईश्वर, परमेश्वर् के पैदा करने वाले हैं, वस, इसी एक राज़को जानने के लिये मैंने अपना जीवन खो दिया कि संतमत वालों के पास क्या चीज़ है जो ईश्वर और परमेश्बर को भी पैदा करने वाले समझते हैं। दाता दयाल जी महाराज पर मेरा विश्वास तो नहीं टूटा मगर बानी भेद नहीं देती थी। इसलिये प्रण किया था कि जो समझ में आयेगा बता जाऊंगा और दाता जी ने कहा था कि शिक्षा बदल जाना। हज़ूर बाबा सावन सिंह जी महाराज ने भी हुक्म दिया था कि निर्भय होकर काम कर जाना, सो कर चला, मेरा निज अनुभव मानता है कि संत बनना कोई सरल काम नहीं है। मुझ पर समय समय पर संतपने को हालत तारी होती है, चौबीस घण्टे नहीं। अब यह प्रार्यना है कि यह संसार मेरे लिए सदा के लिये लोप हो जाये और अपनी हस्ती खो कर ज़ात में समा जाऊं मगर यह उसकी इच्छा है।

फकीर्

ज़रूरत है

मानवता मन्दिर सुतहरी रोड़, होशियारपुर में शीघ्र ही एक प्रिन्टिग प्रेस लग रहा है, जिस के लिये काम करने वाले (1) मशीन मैन, (2) कम्पोज़ीटर आदि की सेवाओं को अवश्यकता है। अभिलाषी सज्जन प्रार्थना पत्र भेजें और अपनी योग्यता और वेतन भी लिखें।

सेक्रेटरी :-
मानवता मन्दिर
होशियारपुर।

सब सज्जनों से प्रार्थना है कि मानवता मन्दिर के साथ या हज़ूर परम दयाल के साथ पत्र व्यवहार करते समय अपना पूरा पता अच्छी तरह लिखा करें कई सज्जन अपना पता लिखना भूल जाते हैं ज़िस के कारण हम उत्तर न देने के लिये विवश हो जाते हैं।

सेक्रेटरी
मानवता मन्दिर